हरिभूमि
भिवानी-दादरी भूमि
रोहतक, रविवार, 16 फरवरी 2025

11 छात्राओं को दी बहते खून को रोकने व सीपीआर...

12 100 मीटर नींबू रेस, 400 मीटर दौड़ एवं डिस्कस ...

खबर संक्षेप

बोलेरो की टक्कर से बाइक सवार की मौत

लोहारू। गांव सिंघानी के नजदीक मोटरसाइकिल व बोलेरो की टक्कर में मोटरसाइकिल सवार व्यक्ति की मौत हो गई। पुलिस को दिए बयान में सिंघानी निवासी सतीश ने बताया कि वह अपने भतीजे नवीन को मोटरसाईकिल पर बैठाकर खेत से गांव की ओर जा रहा था। इस दौरान तेज गति से आई बोलेरो गाड़ी ने उनकी मोटरसाइकिल को टक्कर मार दी, जिससे उसके भतीजे की मौके पर ही मौत हो गई। हादसे के बाद आरोपी बोलेरो चालक मौके से फरार हो गया। पुलिस ने आरोपी बोलेरो चालक के खिलाफ केस दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी है।

72,000 की धोखाधड़ी का आरोपी गिरफ्तार

भिवानी। थाना साइबर क्राइम पुलिस ने क्रेडिट कार्ड के रिवॉर्ड पॉइंट दिलवाने के नाम पर धोखाधड़ी के मामले में आरोपी को दिल्ली से गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। अजीत निवासी बवानी खेड़ा ने थाना साइबर क्राइम पुलिस को एक शिकायत दर्ज करवाई थी,जिसमें शिकायतकर्ता ने 72 हजार रुपये की धोखाधड़ी की बात कही थी। इसी मामले में आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान मोहम्मद निवासी नई बस्ती जामिया नगर ओखला के रूप में हुई थी।

नौकरी का झांसा दे ठगी करने वाला गिरफ्तार

चरखी दादरी। दादरी पुलिस ने नौकरी का झांसा देकर लाखों की ठगी करने वाले गिरोह के तीन सदस्यों को काबू किया है। इस मामले में पुलिस पहले 7 आरोपियों को गिरफ्तार कर चुकी है। राजस्थान के झुंझुनू जिले के गांव भालोट निवासी अमन ने पुलिस को शिकायत दर्ज करवाई थी कि उसके साथ नौकरी लगवाने के नाम पर धोखाधड़ी की गई है। पुलिस ने इस मामले में बिहार के लखापुर निवासी विजय कुमार, गडरिया टोला निवासी अनिल कुमार और देवरा निवासी दीपक कुमार को गिरफ्तार कर लिया है।

निकाय चुनाव : 17 तक लिए जाएंगे नामांकन और 18 को होगी छंटनी

पांचवें दिन बवानीखेड़ा से 2, सिवानी से 29 और लोहारू से 13 उम्मीदवारों ने भरा पर्चा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

निकाय चुनाव को लेकर इन दिनों राजनीतिक माहोल गर्माया हुआ है। इच्छुक लोग तैयारियों में जुटे हैं। निकाय चुनाव के लिए 17 फरवरी तक नामांकन लिए जाएंगे। शनिवार को नामांकन के पांचवें दिन बवानीखेड़ा से 2, सिवानी से 29 और लोहारू से 13 उम्मीदवारों ने नामांकन पत्र दाखिल किया।

सिवानी नपा के रिटर्निंग अधिकारी एवं एसडीएम विरेन्द्र सिंह ने बताया कि शनिवार को नगर पालिका वार्ड पार्षद के लिए 24 तथा प्रधान पद के लिए 5 नामांकन पत्र दाखिल किए गए हैं। जिसमें पुजा, पुजा रानी , अन्नु लोहिया तथा वन्दना, व तरन्नुम केडिया ने प्रधान पद के लिए आवेदन किया। वहीं वार्ड पार्षद के लिए वार्ड नं 14 में एक , वार्ड नंबर 3 में एक, वार्ड नंबर 8 में दो, वार्ड नंबर 2 में पांच , वार्ड नंबर 16 में दो, वार्ड नंबर 11 में दो , वार्ड नंबर 1 में दो, वार्ड नंबर 9 में एक, वार्ड नंबर 4 में तीन , वार्ड नंबर 10 में तीन तथा वार्ड नंबर 7 में दो नामांकन पत्र हुऐ है। बता दें कि शुक्रवार को भी 6 उम्मीदवारों ने वार्ड पार्षद के लिए अपने नामांकन पत्र दाखिल किए थे। अब तक वार्ड पार्षद व प्रधान पद के लिए कुल 35 नामांकन पत्र दाखिल हो चुके हैं।

रिटर्निंग अधिकारी ने बताया कि हरियाणा राज्य चुनाव आयोग के निर्देशानुसार नगर पालिका चुनाव के लिए प्रत्याशी 17 फरवरी सोमवार तक सुबह 11 बजे से 03 बजे तक नामांकन दाखिल करवा सकेंगे। रविवार को अवकाश रहेगा। उन्होंने बताया कि 18 को नामांकन पत्रों की जांच का कार्य किया जाएगा। नगर पालिका चुनाव के लिए नामांकन पत्र आवेदन करने वाले प्रत्याशी 19 फरवरी को सुबह 11 बजे से सांय 03 बजे तक नाम वापस ले सकते हैं, वहीं 19 फरवरी को दोपहर तीन बजे के बाद प्रत्याशियों को चुनाव चिह्न आवंटित कर दिए जाएंगे। इसके बाद 19 फरवरी को ही चुनाव लडने वाले प्रत्याशियों की सूची निर्धारित स्थान पर चस्पा कर दी जाएगी। आगामी 02 मार्च को सुबह 8 बजे से शाम 6 बजे तक मतदान कंरवाया जाएगा। 12 मार्च को सुबह 8 बजे से मतगणना करवाई जाएगी।

भिवानी। सिवानी में नगर पालिका चुनाव के लिए नामाकंन पत्र दाखिल करते हुए।

- शनिवार को सिवानी नगर पालिका वार्ड पार्षद के लिए 24 तथा प्रधान पद के लिए 5 नामांकन पत्र दाखिल हुए
- शुक्रवार को भी 6 उम्मीदवारों ने वार्ड पार्षद के लिए भरा था पर्चा

चेयरमैन व पार्षद के लिए 19 नामांकन पत्र दाखिल हुए

बवानीखेड़ा। बवानी खेड़ा नगर पालिका चुनावों के नामांकन पत्र को लेकर शनिवार को 17 नामांकन पत्र दाखिल हुए। हालांकि दो नामांकन शुक्रवार को दाखिल हुए थे। इस प्रकार से कुल 19 नामांकन दाखिल हुए जिसमें चेयरमैन व पार्षद दोनों शामिल हैं। वहीं भाजपा नेता सुरेश ओड के भाई विष्णु ओड ने भी वार्ड 9 से अपना नामांकन पत्र दाखिल किया। चुनाव नपा सचिव विनय कुमार ने बताया कि मतदान 02 मार्च को प्रातः 8 से सायं 6 तक होंगे। एसडीएम महेश कुमार ने बताया कि 18 फरवरी को प्रातः 11:30 बजे से नामांकन पत्रों की छंटनी होगी। शनिवार को नगर पालिका अध्यक्ष पद के लिए तीन और वार्ड पार्षदो के लिए 14 नामांकन पत्र दाखिल किए गए हैं। प्रधान पद के लिए टीन्कू, अजीत कुमार व रमेश कुमार सहित तीन नामांकन पत्र दाखिल किए गए हैं। वहीं पार्षद पद के लिए वार्ड नं एक से तीन, वार्ड नं तीन से एक, वार्ड नम्बर छः से दो, वार्ड नम्बर नौ से तीन, वार्ड नम्बर 11 से एक, वार्ड नम्बर 15 से दो और वार्ड नम्बर 16 से दो नामांकन पत्र दाखिल किए गए हैं।

शनिवार को 13 ने दाखिल किया नामांकन पत्र, अब तक 17 उम्मीदवारों भर चुके हैं पर्चा

लोहारू। नगर पालिका चुनावों को लेकर शहर में सरगर्मियां तेज होने लगी है। नामांकन दाखिल करने के पांचवें दिन लोहारू में विभिन्न वार्डों के पार्षद पद के लिए 10 उम्मीदवारों ने नामांकन पत्र दाखिल किया वहीं प्रधान पद के लिए तीन उम्मीदवारों ने नामांकन जमा कराया। पांचवें दिन तक शहर के 17 उम्मीदवार अपना नामांकन दाखिल कर चुके हैं। सोमवार को नामांकन दाखिल करने का अंतिम दिन है तथा अंतिम दिन काफी गहमागहमी का माहौल होने की उम्मीद है। 2 मार्च को लोहारू नगर पालिका के अध्यक्ष और 14 वार्डों के पार्षद पदों के लिए चुनाव होने हैं। राज्य निर्वाचन आयोग के अनुसार 17 फरवरी तक नामांकन पत्र दाखिल किए जाएंगे तथा 18 को नामांकन पत्रों की जांच की होगी। जानकारी अनुसार अब तक नपा अध्यक्ष पद के लिए प्रदीप सैनी, पवन, सुरेश सिंह और राजकुमार ने नामांकन पत्र दाखिल किया है। वहीं वार्ड 1 से ममता, वार्ड 2 से सुनील सोलंकी, वार्ड 3 से सुरेंद्र कुमार, वार्ड 4 से महेश, वार्ड 5 से किरण कुमारी, संजु कुमारी, वार्ड 7 से सुमेर सिंह तथा वार्ड 9 से रवि अग्रवाल, वार्ड 10 से निरंजन, संदीप व जयसिंह, वार्ड 11 से रूबी, वार्ड 12 से दिव्या ने नामांकन पत्र दाखिल किया है। वार्ड 6, 8, 13 व वार्ड 14 से अब तक किसी भी उम्मीदवार ने नामांकन पत्र दाखिल नहीं किया है।

लोहारू। नगर पालिका अध्यक्ष पद के लिए नामांकन पत्र दाखिल करते राजकुमार। फोटो : हरिभूमि

राष्ट्रीय युवा खेल प्रतियोगिता में प्रिंस ने जीता स्वर्ण पदक

भिवानी। प्रतियोगिता में बेहतरीन प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागी को सम्मानित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

इंडियन यूथ स्पोर्ट्स एसोसिएशन द्वारा राष्ट्रीय युवा खेल प्रतियोगिता रॉयल कर्जत कैंप महाराष्ट्र में आयोजित की गई, जिसमें के एम पब्लिक स्कूल के छात्र प्रिंस ने कबड्डी में स्वर्ण पदक प्राप्त कर विद्यालय का नाम रोशन किया। विद्यालय प्राचार्या रेनू सैनी, उप.प्राचार्या नीलम गौतम, समिति सदस्य अमिता शर्मा व सुनील शर्मा,गतिविधि प्रभारी सारिका पंडित, खेल प्रशिक्षिका आरती शर्मा व प्रशिक्षक आकाश ने प्रार्थना सभा में छात्र को मेडल पहनाकर सम्मानित किया व उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। प्राचार्या ने खिलाड़ी छात्र के माता.पिता को बधाई देते हुए कहा कि मेडल प्राप्त कर छात्र ने विद्यालय का नाम गौरवान्वित किया है।

नालों की राह में अतिक्रमण बना रोड़ा,सड़कों पर फैल रहा है पानी

भिवानी। शायद शहर का कोई नाली या नाला ऐसा नहीं बचा होगा। जहां पर छोटा या बड़ा अतिक्रमण न हो। कई जगहों पर चबूतरों ने तो कई जगहों पर घरों के आगे बनाई गई सीढिंयों की वजह से रास्ते तो तंग हुए है साथ में नालों का भी दम घोटा गया। जहां पर नालों पर अतिक्रमण हुआ है। वहां पर न तो नालों की सफाई हो पा रही है और न ही उनकी मरम्मत आदि करवा पा रहे है। जिस वक्त शहर का पानी इन नालों से सीवर के मेनहोल की तरफ बढ़ता है तो अतिक्रमण वाली जगह पर शिल्ट ज्यादा होने की वजह से पानी वहीं पर सड़कों पर फैलने लगता है। यह स्थिति किसी एक इलाके की नहीं,बल्कि अधिकांश शहर की बनी है।

शुक्रवार को नप बावड़ी गेट इलाके में चंद्रगिरी स्कूल के सामने वाली सड़क के निर्माण कार्य का शुभारंभ करवाने के लिए गया था,लेकिन वहां पर पहले से ही नाले का पानी सड़क पर बह रहा था। जिस वजह से सड़क का निर्माण कार्य शुरू करवाने की बजाए नगरपरिषद ने सबसे पहले नाले पर हुए अतिक्रमण को हटाने का कार्य शुरू करवाया। वैसे तो शहर का कोई नाला व नाली अतिक्रमण से अछूता नहीं है,लेकिन सबसे बुरी स्थिति अंदरूनी शहर की है। अंदरूनी शहर के अधिकांश नालों पर अतिक्रमण है। इनके साथ साथ अंदरूनी रिहायशी कॉलोनियों की भी स्थिति इसी तरह की बनी है। वहां पर नालियों पर अतिक्रमण के साथ साथ लोगों ने गली व सड़कों पर चबूतरें व सीढिंया उतारी हुई है।

Join Kiddle
Shape Young Futures!
We're Hiring
Passionate Educators & Professionals
• Branch Heads •
Salary: ₹25K - ₹40K/month
• 3-5 years of experience in preschool management with strong leadership and problem-solving skills
• Accountant & IT Staff •
• Pre-School Teachers •
Salary: ₹10K - ₹25K/month
• Lead Teachers
• Assistant Teachers
• Activity & Art Teachers
• Admission Counsellor •
Apply Now
Send your resume to careers@kiddle.school
Whatsapp us at +91 99915 30507
Visit Kiddle Preschools at
Chhapar | Neemriwali | Jui | Bapora | Nandgaon | Bilawal
Shortlisted candidates will be contacted for an interview

छठी क्लास के भी जोड़े गए सम्पर्क दीदी के साथ सवाल

'सम्पर्क दीदी' करेगी 'शंकाओं का समाधान'

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

अभी तक शिक्षा विभाग ने एफएलएन के तहत पहली क्लास से लेकर पांचवीं कक्षा तक के बच्चों की सम्पर्क दीदी के सहारे शंकाओं को दूर किया जाता रहा है। अब विभाग ने छठी क्लास के बच्चों की भी शंकाएं इसी सम्पर्क दीदी(एप) के जरिए हल करने की तैयारी कर ली है। हालांकि अभी यह स्पष्ट नहीं हो पाया है कि छठी क्लास के सिलेबस को शामिल किया जाएगा या आठवीं तक,लेकिन छठी तक के सिलेबस को इसमें शामिल करने की प्रक्रिया पूरी की जा चुकी है। अगर शिक्षक नहीं पहुंचा तो उस दिन सम्पर्क दीदी एप के जरिए ही बच्चों को उस दिन के सभी टॉपिकों को हल करवाया जाएगा। यहां तक कि बच्चों की शिक्षा से संबंधित शंकाओं को भी दूर किया जा सकेगा। नए सत्र से लागू होना माना जा रहा है।

सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार अभी तक जिले में पहली से पांचवीं कक्षा तक के मॉडल संस्कृति प्राइमरी स्कूलों में सम्पर्क दीदी के जरिए सिलेबस को पढ़ाया जा रहा है। अगर शिक्षक भी नहीं पहुंचता तो दूसरा कोई भी टीचर उस क्लास में जाकर बच्चों से पूछकर सम्पर्क दीदी ऐप के जरिए बच्चों को पढ़ा सकता है। उसमें कम्प्यूटर के जरिए लेशन के सभी सवालों का जवाब बोर्ड पर नजर आने लगेगा। इस तरह से टॉपिक क्लीयर करने की वजह से बच्चें बोर भी नहीं होते और उनको आसानी से समझ भी आ जाता है। बताया जा रहा है कि अब शिक्षा विभाग इस योजना को छठी क्लास तक ले जाने की तैयारी में है। इसका विभाग ने खाका भी तैयार कर लिया है। छठी क्लास का सिलेबस सम्पर्क दीदी ऐप में शामिल किया गया है। ताकि नए सत्र से इस क्लास के बच्चों को भी पढाया जा सकता है।

क्या है सम्पर्क दीदी ऐप

बताते है कि शिक्षा विभाग शिक्षकों से किसी भी क्लास के किसी लेशन को किसी शिक्षक तैयार करवा लेता है। उस शिक्षक से उस लेशन के अंत में जितने भी मायने व सवाल या प्रशन होते है। उन सभी के जवाब शिक्षक देता है। अगर किसी सवाल या प्रशन में उदाहरण देने की जरूरत भी पड़ती है तो शिक्षक उदाहरण सहित उसका जवाब देता है। उसकी वीडियों तैयार करवाई जाती है और उस वीडियो को सम्पर्क दीदी ऐप पर डाल दिया जाता है। जब भी जरूरत होती है।उसी समय उस ऐप के जरिए उस वीडियो को संचालित करके बच्चों की उस लेशन के सभी सवाल तथा प्रशनों के जवाब दिए जाते है। इस बार छठी क्लास के सिलेबस की भी इसी तरह की वीडियो तैयार करवाकर उक्त ऐप पर डलवाई जाने की प्रक्रिया जारी है।

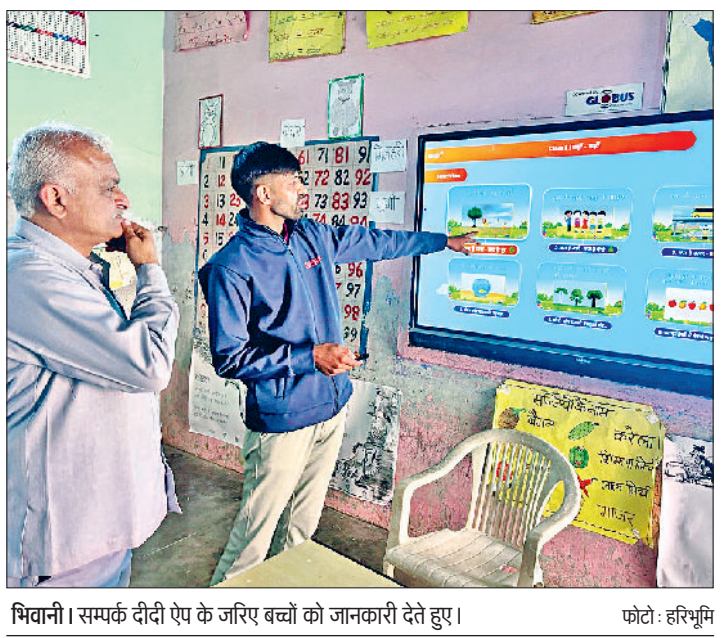

भिवानी। सम्पर्क दीदी ऐप के जरिए बच्चों को जानकारी देते हुए। फोटो : हरिभूमि

- अगर शिक्षक नहीं पहुंचा तो उस दिन सम्पर्क दीदी एप के जरिए ही बच्चों को उस दिन के सभी टॉपिकों को हल करवाया जाएगा।
- कम्प्यूटर के जरिए लेशन के सभी सवालों का जवाब बोर्ड पर नजर आने लगेगा

शिक्षकों की कमी होती है पूरी

अगर किसी प्राइमरी मॉडल संस्कृति स्कूल में शिक्षकों की कमी है तो कुछ हद तक सम्पर्क दीदी उस समस्या को हल करने में सहायक होती है। यह शार्टटर्म के लिए समस्या का समाधान करती है। किसी दिन शिक्षकों की कमी हुई तो स्कूल का कोई भी दूसरा शिक्षक वहां जाकर सम्पर्क दीदी ऐप को चालू कर देगा और बच्चों के मुताबिक उस दिन के उस लेशन को चालू कर देगा। बच्चे खेल खेल में उस चेप्टर को पढ भी लेंगे और उनका समय भी बर्बाद नहीं होगा। फिलहाल भिवानी के 68 प्राइमरी मॉडल संस्कृति स्कूलों में यह नई व्यवस्था चालू की जा चुकी है।

सर्वश्रेष्ठ | श्रीराम
SHREE RAM PUBLIC SCHOOL
Affiliated to CBSE- 532046
IIT-JEE | NEET-UG | NDA | OLYMPIAD | FOUNDATION
Science | Commerce | Humanities
Make your child a Part of the Best CBSE School in Badhra
ANNU MBBS
BPS Medical College, Khanpur Sonipat
MANU KUMARI MBBS
Govt Medical College Kathua J&K
SNEHLATA MBBS
BPS Medical College, Khanpur Sonipat
ADMISSION OPEN
2025-26
ANSHU
98.38%tile
JEE MAIN 2025
KASHISH
93.35%tile
JEE MAIN 2025
OPEN POSITIONS
*All PGTs | *All TGTs | *All PRTS
For Competitive Exam: *PCMB | Science
Wellness Teacher: (*Counsellor) | Communication (*English Spoken)
*Abacus | *Vedic Maths
Activity Teacher: *Music & Dance
Trainer: *NCC | *Scout & Guide
For Demo & Interview visit School Campus from 17 Feb. to 22 Feb. 2025
SUBMIT YOUR CV
WhatsApp: 8199991081
srpskanhra2012@gmail.com
Kanhra-Badhra (Charkhi Dadri)
Haryana-127308
Ph. 01252-299999
M. 8199991081-84

अग्रेसिव हाइब्रिड फंड शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव दौरान मुनाफे का सौदा

▶▶ परिसंपत्ति का 65 से 80% आवंटन शेयरों में किया जाता है निवेश
▶▶ शेष बॉन्ड में लगाया जाता है, इसमें नुकसान होने बेहद कम चांस
▶▶ शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव निवेशकों के लिए सबसे बड़ी चुनौती
▶▶ संतुलित परिसंपत्ति आवंटन से चुनौतियों से निपटने में समर्थ

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव निवेशकों के लिए हमेशा से ही एक चुनौती बनी हुई है। इसके साथ ही लंबे इंतजार के बाद ब्याज दर में कटौती की संभावना बढ़ गई है। ऐसे में निवेश के मोर्चे पर संतुलित दृष्टिकोण अपनाने के लिए अग्रेसिव हाइब्रिड म्युचुअल फंड के जरिये निवेश समझदारी भरा कदम हो सकता है। बाजार के जानकारों का कहना है कि 'वैश्विक आर्थिक अनिश्चितता, मुद्रास्फीति के दबाव और ब्याज दर में संभावित कटौती जैसी आशंकाओं के कारण शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव वाले मौजूदा माहौल में निवेश के लिए अग्रेसिव हाइब्रिड फंड बिल्कुल उपयुक्त हैं। ये संतुलित परिसंपत्ति आवंटन के कारण ऐसे फंड इन चुनौतियों से निपटने में अधिक समर्थ होते हैं।' 'हाइब्रिड फंड सभी परिस्थितियों के लिए उपयुक्त होते हैं। ये फंड इक्विटी बाजार में नए निवेशकों के लिए सबसे अच्छे होते हैं, क्योंकि इनसे परिसंपत्ति वर्ग में भरोसा बढ़ाने में मदद मिलती है।'

उतार-चढ़ाव से बचाव

अग्रेसिव हाइब्रिड फंड के तहत परिसंपत्ति का 65 से 80 फीसदी आवंटन शेयरों में और शेष बॉन्ड में किया जाता है। आम तौर पर ये फंड अपने इक्विटी पोर्टफोलियो के लिए लार्जकैप शेयरों में अधिक निवेश करने की रणनीति अपनाते हैं। इससे मिडकैप एवं स्मॉलकैप शेयरों में अधिक निवेश वाले पोर्टफोलियो के मुकाबले उतार-चढ़ाव के जोखिम को कम करने में मदद मिलती है। ब्याज दरों में गिरावट आने पर पोर्टफोलियो के बॉन्ड वाले हिस्से से पूंजीगत लाभ मिलता है। मगर ब्याज दरों में वृद्धि होने पर अल्प अवधि में नुकसान भी हो सकता है।

70 फीसदी आवंटन लार्जकैप में

बाजार के जानकारों के अनुसार 'फिलहाल इस श्रेणी में 70 फीसदी से अधिक का आवंटन लार्जकैप शेयरों में किया जाता है। इससे पोर्टफोलियो को स्थिरता मिलती है और उस पर मिडकैप एवं स्मॉलकैप में अधिक आवंटन वाले पोर्टफोलियो के मुकाबले बाजार के उतार-चढ़ाव का कम असर होता है। स्मॉलकैप शेयरों में 5 से 7 फीसदी और बाकी

मिडकैप शेयरों में निवेश किया जाता है। इससे फंड के इक्विटी पोर्टफोलियो में मिडकैप एवं स्मॉलकैप से संबंधित जोखिम कम होता है। मिडकैप और स्मॉलकैप शेयर फिलहाल अधिक मूल्यांकन पर कारोबार कर रहे हैं। इसके अलावा डेट वाला हिस्सा पोर्टफोलियो को अधिक स्थिरता प्रदान करता है।'

लार्जकैप बेहतर

आर्थिक मंदी और कंपनियों के सुस्त मुनाफे जैसी स्थितियों का सामना करने के लिए लार्जकैप शेयर आम तौर पर मिडकैप एवं स्मॉलकैप शेयरों के मुकाबले बेहतर स्थिति में होते हैं। 'वित्त वर्ष 2024 जैसी बाजार परिस्थितियों में हाइब्रिड फंड शुद्ध इक्विटी फंड के मुकाबले कमजोर प्रदर्शन करते हैं। मगर वे लंबी अवधि में जोखिम के बाद भी बेहतर रिटर्न देते हैं क्योंकि बाजार का रुख आम तौर पर चक्रीय होता है। शेयर बाजार में पिछले दो वर्षों के शानदार रिटर्न के बाद 2025 उतार-चढ़ाव वाला वर्ष हो सकता है। ऐसे में हाइब्रिड फंड का प्रदर्शन आम तौर पर बेहतर होता है। इसके अलावा हम उम्मीद करते हैं कि भारतीय रिजर्व बैंक इस साल दरों में कटौती करेगा। इससे डेट फंड को अधिक रिटर्न देने में मदद मिलेगी क्योंकि बॉन्ड की कीमतों में तेजी आ सकती है।'

किसे करना चाहिए निवेश?

अग्रेसिव हाइब्रिड फंड उन निवेशकों को आकर्षित करते हैं जो अपेक्षाकृत कम उतार-चढ़ाव के साथ शेयर बाजार में निवेश करना चाहते हैं। 'यह फंड कम जोखिम लेने वाले निवेशकों के लिए उपयुक्त है क्योंकि डेट आवंटन के कारण इसमें उतार-चढ़ाव का जोखिम कम होता है। इसके अलावा यह फंड उन नए निवेशकों के लिए भी उपयुक्त हैं जो शेयर बाजार में अपेक्षाकृत सुरक्षित तरीके से प्रवेश करना चाहते हैं और जिनके वित्तीय लक्ष्य मध्यावधि के लिए हैं।'

इन बातों का रखें ध्यान

निवेशकों को अपने पोर्टफोलियो का आकलन करना चाहिए और जोखिम लेने की अपनी क्षमता के अनुरूप फंडों का चयन करना चाहिए। उन्हें निवेश से पहले फंड के पिछले प्रदर्शन पर भी गौर करना करना चाहिए। वैसे तो इन फंडों की रफ्तार अपेक्षाकृत स्थिर होती है, लेकिन कभी-कभी उतार-चढ़ाव का दौर भी दिख सकता है। इसलिए निवेशकों को कम से कम 5 साल के लिए निवेश पर विचार करना चाहिए। इन फंडों में निवेश करने का सबसे प्रभावी तरीका सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) है। 'अग्रेसिव हाइब्रिड फंडों में कम से कम 3 से 5 साल तक निवेश रखना चाहिए। इससे निवेशक को बाजार चक्रों के प्रभावों से निपटने और संतुलित रिटर्न हासिल करने में मदद मिलती है।' उनका सुझाव है कि मध्यम जोखिम लेने वाले निवेशक अपने पोर्टफोलियो का 15 से 25 फीसदी आवंटन इस फंड में कर सकते हैं जबकि कम जोखिम लेने वाले निवेशकों को 10 से 15 फीसदी आवंटन करना चाहिए।

मल्टी एसेट फंड बाजार की उथल-पुथल के बीच स्टेबल रिटर्न का दम

■ 1 से 5 साल में मल्टी एसेट फंड की टॉप स्कीम्स ने दिया अच्छा पैसा
■ कम पैसों में डायवर्सिफाइड पोर्टफोलियो बनाने के लिए जाना जाता है
■ इक्विटी फंड्स में हमेशा लॉन्ग टर्म के लिए निवेश करें

जानकारी
बिजनेस डेस्क

बाजार में भारी उथल-पुथल हो तो तमाम निवेशकों के सामने स्टेबल रिटर्न हासिल करने की चुनौती खड़ी हो जाती है। म्यूचुअल फंड्स में पैसे लगाने वाले रिटेल इनवेस्टर्स के सामने भी यही सवाल होता है कि इक्विटी फंड्स के गिरते रिटर्न के बीच उन्हें कहां निवेश करना चाहिए? हालांकि इक्विटी फंड्स में हमेशा लॉन्ग टर्म के लिए निवेश करना चाहिए और शॉर्ट टर्म में होने वाली उथल-पुथल से घबराना नहीं चाहिए, लेकिन सच तो यह भी है कि इक्विटी मार्केट के उतार-चढ़ावों को बैलेंस करने के लिए आपके पोर्टफोलियो में डेट से लेकर गोल्ड और सिल्वर तक, दूसरे एसेट क्लास वाले निवेश भी शामिल होने चाहिए। मगर जिन निवेशकों का पोर्टफोलियो इतना बड़ा नहीं होता कि वे इतने सारे अलग-अलग एसेट क्लास में निवेश कर सकें, उनके सामने क्या विकल्प? इस सवाल का जवाब हो सकते हैं मल्टी एसेट एलोकेशन फंड्स के जरिये कम पैसों में ही पोर्टफोलियो को तमाम एसेट क्लास में डायवर्सिफाई किया जा सकता है।

एक साल में सबसे ज्यादा रिटर्न देने वाले फंड

1. व्हाइटओक कैपिटल मल्टी एसेट एलोकेशन फंड, डायरेक्ट प्लान :	19.66%
2. डीएसपी मल्टी एसेट एलोकेशन फंड, डायरेक्ट प्लान :	17.23%
3. आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल मल्टी एसेट फंड, डायरेक्ट प्लान :	16.11%
4. निप्पॉन इंडिया मल्टी एसेट एलोकेशन फंड, डायरेक्ट प्लान :	15.98 %
5. आदित्य बिड़ला सन लाइफ मल्टी एसेट एलोकेशन फंड, डायरेक्ट प्लान :	15.81%
6. यूटीआई मल्टी एसेट एलोकेशन फंड, डायरेक्ट प्लान :	15.45%
7. बंधन मल्टी एसेट एलोकेशन फंड, डायरेक्ट प्लान :	15.39%
8. एक्सिस मल्टी एसेट एलोकेशन फंड, डायरेक्ट प्लान :	15.10%

लॉन्ग टर्म रिटर्न : मल्टी एसेट एलोकेशन फंड्स का लॉन्ग टर्म रिटर्न देखने से पता चलता है कि लंबी अवधि के निवेश के लिए भी यह काफी बेहतर विकल्प हो सकते हैं। टॉप 5 मल्टी एसेट एलोकेशन फंड्स के पिछले 5 साल के रिटर्न के आंकड़े इस बात की गवाही दे रहे हैं।

5 साल में सबसे ज्यादा रिटर्न देने वाले फंड

1. क्वांट मल्टी एसेट फंड, डायरेक्ट प्लान :	27.78 %
2. आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल मल्टी एसेट फंड, डायरेक्ट प्लान :	21.68%
3. यूटीआई मल्टी एसेट एलोकेशन फंड, डायरेक्ट प्लान :	15.84%
4. एचडीएफसी मल्टी एसेट फंड, डायरेक्ट प्लान :	15.70%
5. एसबीआई मल्टी एसेट एलोकेशन फंड, डायरेक्ट प्लान :	14.39%

मल्टी एसेट फंड्स की इनवेस्टमेंट स्ट्रैटजी : मल्टी एसेट एलोकेशन फंड्स की निवेश रणनीति में निवेशकों को हमेशा स्टेबल और बैलेंस्ड रिटर्न देने पर जोर दिया जाता है। अपने इस मकसद को हासिल करने के लिए ये फंड इक्विटी और डेट के अलावा गोल्ड, सिल्वर, रियल एस्टेट इन्वेस्टमेंट ट्रस्ट्स और इंफ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट ट्रस्ट्स में भी पैसे लगाते हैं। इक्विटी, डेट और गोल्ड में इनका निवेश कम से कम 10-10% होता है। ऐसी निवेश रणनीति और अल-अलग एसेट क्लास में बंटे पोर्टफोलियो की वजह से ये फंड बाजार में तेज उतार-चढ़ाव के दौरान भी बेहतर रिटर्न देने में सफल होते हैं। साथ ही ये फंड कम रिस्क में बेहतर रिटर्न के लिए बाजार के हालात और ट्रेंड्स को ध्यान में रखते हुए अपने एसेट एलोकेशन में बदलाव भी करते रहते हैं।

अस्थिरता के दौर में निवेश का बेहतर विकल्प

मल्टी एसेट एलोकेशन फंड्स को उनके डायवर्सिफाइड पोर्टफोलियो की वजह से उतार-चढ़ाव भरे माहौल में निवेश का बेहतर तरीका माना जाता है। हाइब्रिड म्यूचुअल फंड्स की कैटेगरी में आने वाले इन फंड्स के पोर्टफोलियो में इक्विटी से लेकर डेट और गोल्ड-सिल्वर समेत तमाम अलग-अलग एसेट्स क्लास शामिल होते हैं। यही वजह है कि इनका रिस्क-रिटर्न बैलेंस काफी अच्छा रहता है।

टॉप मल्टी एसेट एलोकेशन फंड्स का 1 साल का रिटर्न

इन दिनों बाजार में देखी जा रही भारी उथल-पुथल के बावजूद कम से कम 8 मल्टी एसेट एलोकेशन फंड्स ऐसे हैं, जिन्होंने 1 साल में 15% से ज्यादा रिटर्न दिया है। इनमें सबसे ज्यादा मुनाफा देने वाले फंड का एक साल का रिटर्न लगभग 20% रहा है। एक हाइब्रिड फंड्स के लिए इतना रिटर्न काफी अच्छा माना जा सकता है। खास तौर पर बाजार में गिरावट के माहौल को देखते हुए यह वाकई बढ़िया प्रदर्शन है।

किनके लिए सही हैं मल्टी एसेट एलोकेशन फंड

ऐसे इनवेस्टर मल्टी एसेट एलोकेशन फंड में निवेश करने की सोच सकते हैं, जो बाजार की अस्थिरता के दौरान स्टेबल रिटर्न चाहते हैं और इसके लिए अपने पोर्टफोलियो में हर एसेट क्लास को जगह देना चाहते हैं। खास तौर पर ऐसे छोटे निवेशक, जो डायवर्सिफाइड पोर्टफोलियो तैयार करने के लिए ज्यादा बड़ी रकम नहीं लगा सकते, मल्टी एसेट फंड पर विचार कर सकते हैं। हालांकि स्टेबल रिटर्न देने की क्षमता के बावजूद इक्विटी में एक्सपोजर और दूसरे एसेट्स के बाजार की परिस्थितियों से प्रभावित होने के कारण ज्यादातर मल्टी एसेट फंड्स का रिस्क लेवल 'हाई' या 'वेरी हाई' रखा गया है। यानी रिस्क तो इनमें निवेश के साथ भी जुड़ा हुआ है। इसलिए निवेश का फैसला करने से पहले सभी बातों को अच्छी तरह समझ लें।

(डिस्क्लेमर : इस आर्टिकल का उद्देश्य सिर्फ जानकारी देना है, निवेश की सिफारिश करना नहीं है। म्यूचुअल फंड के पिछले रिटर्न को भविष्य में वैसे ही प्रदर्शन की गारंटी नहीं माना जा सकता। निवेश का कोई भी फैसला सेबी से मान्यता प्राप्त निवेश सलाहकार की राय लेने के बाद ही करें।)

पैसिव म्यूचुअल फंड बढ़ रहा बोलबाला एयूएम 24% बढ़कर 11 लाख करोड़ पर

●लगातार निवेशकों की बनते जा रहे हैं पसंद, दे रहे बढ़िया रिटर्न ● इस साल पैसिव फंडों ने मचाया धमाल, दिया कई गुणा मुनाफा ● पैसिव म्यूचुअल फंड में निवेश करने वालों की संख्या तेजी से बढ़ी

योजना
बिजनेस डेस्क

तेजी से बढ़ रही म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री में इस समय पैसिव फंड का बोलबाला है। साल 2024 में इंडेक्स फंड और एक्सचेंज ट्रेडेड फंड सहित पैसिव फंड के निवेशकों के पोर्टफोलियो यानी खाता संख्या में 37 प्रतिशत की तेजी आई है, जबकि कुल एसेट अंडर मैनेजमेंट 24% से ज्यादा बढ़कर 11 लाख करोड़ रुपये के पार पहुंच गया है। आखिर पैसिव फंड क्या होते हैं, जिनका बोलबाला इतनी तेजी से बढ़ता जा रहा है और निवेशकों को यह फंड क्यों इतने पसंद आ रहे हैं। एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया (एम्फी) के आंकड़ों के मुताबिक, म्यूचुअल फंड हाउसों ने 2024 में कुल 122 नई पैसिव फंड योजनाएं लॉन्च कीं। फंड इंडस्ट्री में सबसे प्रमुख कंपनियों में शामिल निप्पॉन इंडिया म्यूचुअल फंड के पास अब पैसिव फंडों में 1.46 करोड़ पोर्टफोलियो हैं। इसका कुल एयूएम 1.65 लाख करोड़ रुपये है और ईटीएफ के ट्रेडिंग वॉल्यूम का 55% बड़ा हिस्सा है। कोटक म्यूचुअल फंड, एक्सिस और मोतीलाल ओसवाल म्यूचुअल फंड जैसे अन्य फंड हाउसों ने भी पैसिव फंड में बेहतर वृद्धि दर्ज की है।

निवेशकों को समझना आसान

निप्पॉन इंडिया म्यूचुअल फंड ने साल 2024 में पैसिव कैटेगरी में 8 नए फंड लॉन्च किए। अब उसके पास उद्योग में 24 ईटीएफ और 21 इंडेक्स फंड हैं। इस श्रेणी को चुनने में निवेशकों की बढ़ती रुचि को देखते हुए अन्य एएमसी ने भी कई पैसिव फंड लॉन्च किए हैं। पैसिव फंडों ने भी निवेशकों को आकर्षित किया है, क्योंकि उनकी लागत संरचना कम होती है और उन्हें समझना आसान होता है, जिससे वे रिटेल और फंड मैनेजर दोनों निवेशकों के लिए एक आकर्षक विकल्प बन जाते हैं।

अद्वितीय निवेश दृष्टिकोण

जो लोग सोच रहे हैं कि पैसिव म्यूचुअल फंड क्या हैं, तो इसका जवाब अद्वितीय निवेश दृष्टिकोण में निहित है। अपने सक्रिय समकक्षों के विपरीत, पैसिवली मैनेज्ड फंड बाजार से बेहतर प्रदर्शन करने का प्रयास नहीं करते हैं। इसके बजाय, उनका प्राथमिक लक्ष्य ऐसे रिटर्न प्राप्त करना है जो बेंचमार्क इंडेक्स को बारीकी से दर्शाते हैं। नतीजतन, फंड मैनेजर की भूमिका अपेक्षाकृत निष्क्रिय होती है, जो एक पोर्टफोलियो संरचना को बनाए रखने पर ध्यान केंद्रित करती है जो इंडेक्स की अंतर्निहित परिसंपत्तियों को दर्शाती है।

क्यों खास हैं पैसिव फंड

निप्पॉन इंडिया म्यूचुअल फंड के ईटीएफ प्रमुख अरुण सुंदरेसन कहते हैं कि पैसिव एक दिलचस्प ऑफरिंग बनाता है। फंड बाजार के विभिन्न हिस्सों में शुद्ध एक्सपोजर प्रदान करते हैं, जिससे वे सच्चे, सही लेबल उत्पाद बन जाते हैं। बहुत सारे अनूठे फंड हैं, जो निवेशकों को चुनने के लिए बहुत अलग पोर्टफोलियो और विभिन्न प्रकार के जोखिम-रिटर्न प्रोफाइल प्रदान करते हैं। इनके इसी डाईवर्सिफिकेशन की वजह से निवेशकों को यहां पैसे लगाना कम जोखिम वाला लगता है।

क्या होते हैं पैसिव फंड

पैसिव म्यूचुअल फंड में किसी सूचकांक या खंड को ट्रैक किया जाता है और इसमें अलग-अलग स्टॉक को चुनने की जरूरत नहीं होती है। इनका खर्चा भी एक्टिव फंड की तुलना में कम आता है। ये फंड बाजार के सूचकांक को दोहराने की कोशिश करते हैं, जबकि बेंचमार्क इंडेक्स को ट्रैक करके अपने जोखिम का आकलन करते हैं। जैसा शेयर बाजार प्रदर्शन करता है, उसी के मुताबिक निवेशकों को रिटर्न देते हैं। इन पर जोखिम भी कम होता है और लंबी अवधि में निवेश करने पर ज्यादा सुरक्षित माना जाता है।

कम प्रबंधन शुल्क लेते हैं

पैसिव फंड्स की मुख्य अपील उनकी कम लागत में निहित है, क्योंकि वे आम तौर पर एक्टिव फंड्स की तुलना में कम प्रबंधन शुल्क लेते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि उन्हें व्यापक शोध, स्टॉक चयन और लगातार ट्रेडिंग की आवश्यकता नहीं होती है, जो सभी खर्चों को बढ़ा सकते हैं। भारत में पैसिव म्यूचुअल फंड्स के उदय के साथ, निवेशकों के पास अपने पोर्टफोलियो में विविधता लाने और संभावित रूप से बाजार-मिलान रिटर्न प्राप्त करने के लिए ढेर सारे विकल्प हैं।

पैसिव फंड निवेशकों को अपने पोर्टफोलियो में विविधता लाने और बाजार के व्यापक क्षेत्रों में एक्सपोजर प्राप्त करने का एक लागत प्रभावी तरीका प्रदान करते हैं। भारत में पैसिव म्यूचुअल फंड्स के उदय के साथ, निवेशकों के पास अपने पोर्टफोलियो में विविधता लाने और संभावित रूप से बाजार-मिलान रिटर्न प्राप्त करने के लिए ढेर सारे विकल्प हैं।

तैयारी — पिछले साल 16 गोल्ड ईटीएफ में 657.46 करोड़ का निवेश हुआ था, दिसंबर 2024 के मुकाबले देखें तो इसमें 486% का उछाल आया

दिसंबर 2024 में गोल्ड ईटीएफ में 640.16 करोड़ रुपये का निवेश हुआ

गोल्ड ईटीएफ में जमकर निवेश कर रहे लोग, करीब 6 गुना बढ़ा जनवरी में 3,751.42 करोड़ रुपये के रिकॉर्ड हाई पर नेट इनफ्लो

इक्विटी में लगातार गिरावट और ग्लोबल अनिश्चितता के बीच भारत में नए साल की शुरुआत यानी जनवरी के दौरान गोल्ड ईटीएफ में रिकॉर्ड निवेश हुआ। यह लगातार 9वां महीना है जब घरेलू स्तर पर गोल्ड ईटीएफ में नेट इनफ्लो दर्ज किया गया है। इससे पहले बीते साल अप्रैल में गोल्ड ईटीएफ में नेट आउटफ्लो देखा गया था। एसोसिएशन ऑफ म्युचुअल फंड्स इन इंडिया (एएमएफआई) के आंकड़ों के अनुसार देश के कुल 18 गोल्ड ईटीएफ में जनवरी 2025 के दौरान रिकॉर्ड 3,751.42 करोड़ रुपये का शुद्ध निवेश हुआ। इससे पहले सबसे ज्यादा मंथली नेट इनफ्लो (+1,961.57 करोड़ रुपये) बीते साल अक्टूबर में आया था। पिछले साल की समान अवधि यानी जनवरी 2024 के मुकाबले यह 471 फीसदी ज्यादा है। पिछले साल की समान अवधि के दौरान देश के कुल 16 गोल्ड ईटीएफ में 657.46 करोड़ रुपये का शुद्ध निवेश हुआ था। पिछले महीने यानी दिसंबर 2024 के मुकाबले देखें तो इसमें 486 फीसदी का उछाल आया है। दिसंबर 2024 के दौरान गोल्ड ईटीएफ में 640.16 करोड़ रुपये रुपये का शुद्ध निवेश हुआ था।

समझदारी
बिजनेस डेस्क

गोल्ड की कीमतों में शानदार तेजी

गोल्ड की कीमतों में शानदार तेजी और लगातार इनफ्लो के चलते जनवरी के अंत में गोल्ड ईटीएफ का नेट एसेट अंडर मैनेजमेंट (एयूएम) बढ़कर रिकॉर्ड 51,839.39 करोड रुपये पर पहुंच गया। पिछले साल की समान अवधि के दौरान यह 27,778.08 करोड़ रुपये था जबकि दिसंबर 2024 में यह 44,595.60 करोड़ रुपये दर्ज किया गया। जनवरी के दौरान घरेलू स्तर पर गोल्ड की बेंचमार्क कीमतों में 8 फीसदी का इजाफा हुआ। इसी अवधि के दौरान घरेलू इक्विटी बेंचमार्क इंडेक्स सेंसेक्स और निफ्टी क्रमश 0.6 और 0.8 फीसदी टूटे। मिडकैप और स्मॉलकैप इंडेक्स में तो क्रमशः 6 फीसदी और 10 फीसदी की जोरदार गिरावट रही।

क्या कहते हैं आंकड़े

इससे पहले पूरे कैलेंडर ईयर 2024 के दौरान गोल्ड ईटीएफ में कुल 11,266.11 करोड़ रुपये का शुद्ध निवेश हुआ जबकि कैलेंडर ईयर 2023 के दौरान 2,923.81 करोड़ रुपये का शुद्ध निवेश दर्ज किया गया था। कैलेंडर ईयर 2022 के दौरान 11 गोल्ड ईटीएफ में कुल 458.79 करोड़ रुपये का निवेश हुआ था।

2024 में मंथली निवेश/निकासी

- दिसंबर 2024 +640.16 करोड़ रुपये
- नवंबर 2024 +1,256.72 करोड़ रुपये
- अक्टूबर 2024 +1,961.57 करोड़ रुपये
- सितंबर 2024 +1,232.99 करोड़ रुपये
- अगस्त 2024 +1,611.38 करोड़ रुपये
- जुलाई 2024 +1,337.35 करोड़ रुपये
- जून +726.16 करोड़ रुपये
- मई +827.43 करोड़ रुपये
- अप्रैल -395.69 करोड़ रुपये
- मार्च +373.36 करोड़ रुपये
- फरवरी +657.46 करोड़ रुपये
- जनवरी +997.22 करोड़ रुपये

क्यों जमकर लग रहा पैसा

जानकारों के अनुसार इक्विटी में लगातार गिरावट और ग्लोबल अनिश्चितता ने निवेशकों को गोल्ड ईटीएफ में निवेश के लिए प्रोत्साहित किया। गोल्ड में बेहतर रिटर्न की संभावना के बीच निवेशक फिलहाल अपने पोर्टफोलियो को डायवर्सिफाई करने के लिए इस एसेट क्लास में ईटीएफ के जरिये जमकर निवेश कर रहे हैं। साथ ही सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड की कोई और सीरीज के आगे लॉन्च नहीं होने के आसार और पिछले बजट में टैक्स नियमों में हुए बदलाव के बाद गोल्ड ईटीएफ का आकर्षण बढ़ा है।

ग्लोबल लेवल पर शानदार शुरुआत

ग्लोबल लेवल पर गोल्ड ईटीएफ के लिए नए साल की शुरुआत शानदार रही। वर्ल्ड गोल्ड काउंसिल से मिले ताजा आंकड़ों के मुताबिक 2025 की शुरुआत यानी जनवरी के दौरान ग्लोबल लेवल पर गोल्ड ईटीएफ में निवेश 3 बिलियन डॉलर बढ़ा। वॉल्यूम /होल्डिंग के लिहाज से इस दौरान निवेश में 34.5 टन की वृद्धि हुई। सोने की कीमतों में तेजी और लगातार दूसरे महीने आए इनफ्लो के दम पर जनवरी 2025 के अंत तक गोल्ड ईटीएफ का एसेट अंडर मैनेजमेंट यानी एयूएम और टोटल होल्डिंग बढ़कर क्रमशः रिकॉर्ड 294.2 बिलियन डॉलर और 3,253.3 टन पर पहुंच गए। ग्लोबल लेवल पर ट्रेड वॉर की आशंका और अमेरिकी डॉलर में कमजोरी के बीच जनवरी में सोने के भाव में तकरीबन 8 फीसदी का इजाफा हुआ।

28.6 टन का आउटफ्लो

पिछले महीने यानी दिसंबर 2024 के दौरान भी गोल्ड ईटीएफ में निवेश 0.3 बिलियन डॉलर यानी 3.6 टन बढ़ा था। हालांकि बीते साल नवंबर में लगातार छह महीने की तेजी के बाद गोल्ड ईटीएफ में 2.1 बिलियन डॉलर यानी 28.6 टन का आउटफ्लो दर्ज किया गया था।जनवरी के दौरान गोल्ड ईटीएफ को सबसे तगड़ा सपोर्ट यूरोप से मिला। पिछले महीने यूरोप में गोल्ड ईटीएफ में निवेश बढ़कर मार्च 2022 के स्तर पर पहुंच गया। इस दौरान यूरोप में 3.4 बिलियन डॉलर (+39 टन) का नेट इनफ्लो देखा गया। ज्यादातर निवेश इंग्लैंड और जर्मनी में आया। हालांकि बीते साल ज्यादातर महीने यूरोप में नेट आउटफ्लो दर्ज किया गया था। नार्थ अमेरिकी फंडों में लगातार दूसरे महीने जनवरी में आउटफ्लो देखा गया। इस दौरान नार्थ अमेरिकी फंडों से निवेशकों ने नेट 499 मिलियन डॉलर (-5.9 टन) निकाले। जबकि एशियाई फंडों में निवेशकों ने जनवरी में नेट 57 मिलियन डॉलर (+0.3 टन) डाले। एशिया में भारत इनफ्लो के मामले में सबसे आगे रहा। हालांकि चीन में इस दौरान 399.1 मिलियन डॉलर का आउटफ्लो दर्ज किया गया।

खबर संक्षेप

भारत माता सेवा मंडल के सदस्यों ने किया योग

भिवानी। भारत माता सेवा मंडल द्वारा एमसी कॉलोनी स्थित सेंट्रल पार्क में नित्य सुबह करवाए जा रहे योग कार्यक्रम सभी नागरिकों के लिए वरदान साबित हो रहा है। योगा कार्यक्रम की शुरुआत में गायक कलाकार जुगनू पेंटर कथूरिया ने योगा के लाभ एवं महत्व पर भजनों के माध्यम प्रकाश डाला। मंडल के अध्यक्ष ठाकुर पदम सिंह चौहान एवं मंडल सेवा प्रमुख अशोक कुमार जूसवाला ने बताया कि योग आध्यात्मिक, शारीरिक और मानसिक प्रथाओं का समूह है।

महाकुंभ जैसे तीर्थ पर पहुंचने से मिलता है मोक्ष

भिवानी। प्रयागराज में आयोजित किए जा रहे महाकुंभ में सेवा देने के लिए युवा जागृति एवं जनकल्याण मिशन ट्रस्ट के बैनर तले स्थानीय हनुमान ढ़ाणी स्थित हनुमान जोहड़ी मंदिर के महंत बालयोगी महंत चरणदास महाराज की प्रेरणा व पुजारी ध्यानदास महाराज, पुरूषोत्तमदास महाराज व भरतदास महाराज के नेतृत्व में 45 दिवसीय कैंप का आयोजन किया।

बीएम सीनियर सेकेंडरी स्कूल में प्रतियोगिता

चरखी दादरी। गांव लोहरवाडा स्थित बीएम सीनियर सेकेंडरी स्कूल में राजकीय कन्या माध्यमिक विद्यालय झींझर के विद्यार्थियों के लिए सामूहिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कन्या स्कूल मुख्य अध्यापक हरिप्रकाश शर्मा ने की। बीएम स्कूल निदेशक मंजीत फौगाट के मार्गदर्शन में कार्यक्रम की विभिन्न गतिविधियां आयोजित हुई।

शिक्षा के साथ संस्कारों का होना महत्त्वपूर्ण

तोशाम। आदर्श कान्वेंट वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कैरू में शनिवार को कक्षा ग्यारहवीं के विद्यार्थियों ने कक्षा बारहवीं के विद्यार्थियों को सहभोज विदाई दी। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कैरू के प्राचार्य एसएन पालीवाल ने शिरकत की। कार्यक्रम का शुभारंभ आदर्श ग्रुप ऑफ एजुकेशन इंस्टिट्यूट के चेयरमैन आरके बंगालिया, स्कूल की प्राचार्या ने किया।

घायलों का जीवन बचाने को प्राथमिक उपचार का ज्ञान जरूरी: प्रदीप

छात्राओं को दी बहते खून को रोकने व सीपीआर सहित फर्स्ट एड की जानकारी

भिवानी। छात्राओं को फर्स्ट एड की जानकारी देते जिला प्रशिक्षण अधिकारी विकास कुमार। *फोटो: हरिभूमि*

राजकीय कन्या स्कूल में बेसिक फर्स्ट एड जागरूकता सेमिनार

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

पीएमश्री राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में शनिवार को कैरियर काउंसलिंग के तहत एनएसक्यूएफ की छात्राओं के लिए एक दिवसीय बेसिक फर्स्ट एड एवं होम नर्सिंग जागरूकता सेमिनार का आयोजन किया। इस मौके पर जिला प्रशिक्षण अधिकारी विकास कुमार ने छात्राओं को बेहोश होने पर क्या करें, बहते खून को रोकने, हड्डी टूटने, सांस बंद हो जाने पर सीपीआर देने की जानकारी दी। बेसिक फर्स्ट एड एवं होम नर्सिंग जागरूकता सेमिनार का महत्व बताते हुए जिला रैडक्रॉस सोसायटी के सचिव प्रदीप कुमार ने बताया कि प्रत्येक युवा को प्राथमिक उपचार की जानकारी होना बहुत जरूरी है। उन्होंने कहा कि जीवन में कभी न कभी ऐसी स्थिति जरूरी आती है, तब प्रत्येक जन को प्राथमिक उपचार की जानकारी की आवश्यकता पड़ती है। आज की भागादौड़ भरे जीवन में प्रत्येक व्यक्ति, विशेषकर युवक-युवतियों को प्राथमिक उपचार की जानकारी होगी तो वे आपातकाल के समय किसी की जान बचाने में सक्षम होंगे।

इससे वे भविष्य में एक सजग एवं जागरूक बन सकते है। सचिव प्रदीप कुमार ने कहा कि कई बार दुर्घटना स्थल या घायल व्यक्ति का स्थान अस्पताल से बहुत दूर हो सकता है और पैरामेडिक्स को उन तक पहुंचने में काफी समय भी लग सकता हैं, ऐसी स्थिति में बीमार या घायल व्यक्ति एक ऐसे व्यक्ति के पास है, जो प्रशिक्षित हो या जिसे बुनियादी प्राथमिक चिकित्सा आती हो तो वह उस व्यक्ति के जीवन बचाने के लिए वरदान बन सकता है।

विद्यालय प्राचार्य कुलवंत कौर ने जिला रैडक्रॉस सोसायटी के सचिव व टीम के सदस्यों का आभार जताया। जागरूकता सेमिनार विद्यार्थियों के लिए काफी फायदेमंद साबित होते है। इस अवसर पर स्वीटी वर्मा, अंजू बाला, मनोज, प्रकाश, नरेंद्र आदि मौजूद रहे।

बजीणा स्कूल में शिविर में 250 विद्यार्थियों का स्वास्थ्य जांचा

भिवानी। गांव बजीणा स्थित पीएमश्री राजकीय वमा विद्यालय में शनिवार को दो दिवसीय स्वास्थ्य जांच कैंप का आयोजन किया। कैंप का शुभारंभ विद्यालय प्राचार्य अनुप सिंह पुनिया ने किया। इस मौके पर सीएचसी कैरू से पहुंचे एएमओ डॉ. यशवंती, एएनएम पूजा शर्मा, एएचसी सुमिता देवी, आशा वर्कर सरोज, एमपीएचडब्ल्यू सुमेर सिंह ने 250 बच्चों की हाइट, वजन, खून की मात्रा, आंख, नांक, गला, दांत व अन्य बीमारियों की जांच की तथा जिन बच्चों को शारीरिक जांच में अधिक परेशानी थी, उन बच्चों को चिह्नित कर उनका रेफर कार्ड बनाया। रेफर कार्ड वाले विद्यार्थियों को पीएचसी, सीएचसी या भिवानी के नागरिक अस्पताल मे जांच करवाने की सलाह दी। शिविर में जांच के बाद बच्चों को उचित दवाईयां व खान-पान की सलाह भी दी। विद्यालय प्राचार्य पुनिया ने कहा कि विद्यार्थियों के लिए स्वास्थ्य जांच कैंप उनके शारीरिक और मानसिक विकास को सुनिश्चित करने में मदद करता है। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य जांच कैंप के माध्यम से विद्यार्थियों में किसी भी संभावित बीमारी का प्रारंभिक चरण में ही पता लगाया जा सकता है, जिससे समय पर उपचार संभव हो पाता है, ऐसे कैंप विद्यार्थियों को स्वस्थ जीवनशैली, पोषण, स्वच्छता और व्यायाम के महत्व के बारे में जागरूक करते हैं। इस अवसर पर विद्यालय प्रवक्ता जितेंद्र कुमार, अजय, किरण, सुमेरसिंह, अनिल शर्मा, रमेश, सुनीता, संजय, प्रिंस, मंजू, मुनेश देवी, सीमा, रिचा, सरला देवी, ज्योति, श्रीकांत व विनोद आदि मौजूद रहे।

बवानीखेड़ा। रक्तदाताओं को बैज लगाकर सम्मानित करते हुए। *फोटो: हरिभूमि*

रक्तदान करना सबसे पुनीत कार्य: सीएमओ

हरिभूमि न्यूज ⏭बवानीखेड़ा

गांव दुर्जनपुर प्राइमरी स्कूल व्यायामशाला प्रांगण में आज ग्रामपंचायत के सहयोग से चाहर परिवार द्वारा प्रसिद्ध समाजसेवी स्वर्गीय चौधरी कोहर सिंह चाहर की पुण्यतिथि पर विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें गांव व आसपास क्षेत्र के रक्तदाताओं ने रक्तदान शिविर में बढ़चढ़कर रक्तदान किया। इस रक्तदान शिविर कार्यकर्म में जिला भिवानी मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ० रघुवीर सिंह शांडिल्य ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। डॉ० शांडिल्य ने बताया कि रक्तदान करना इस युग का सर्वश्रेष्ठ पुनीत कार्य है रक्तदान करने से हम अपने आप को स्वस्थ रखने के साथ साथ जरूरत मंद व्यक्ति के जीवन को बचा सकते हैं, कोई भी स्वस्थ व्यक्ति हर पांचवे अथवा पांचवे महीने के उपरांत रक्तदान कर सकता है। गांव दुर्जनपुर सरपंच प्रतिनिधि प्रदीप सिंह चाहरध् नरेश कुमार चाहर ने बताया कि हर वर्ष की भाँति स्वर्गीय चौधरी कोहर सिंह की तीसरी पुण्यतिथि पर समस्त ग्रामवासियों के सहयोग से बहुत अच्छा कार्यक्रम रहा और आगे भी निरंतर यूँ ही बुजुर्गों की स्मृति में इस प्रकार के पुनीत कार्य करते रहेंगे इस अवसर पर व्यायामशाला इंचार्ज गजानंद कौशिक, राजकीय प्राथमिक शिक्षिका अर्चना अरोड़ा, मुख्य अध्यापक जयप्रकाश, स्वास्थ्य निरीक्षक जगदीश प्रसाद जांगड़ा, एसएमओ डॉ जयेश कुमार, शैलेश जाखड़, आयुष योग सहायक अशोक कुमार, निहाल सिंह नमरदार, लीलूराम, बारूराम कृष्ण चंद्र सतपाल रंगा राधेश्याम संदीप समोता सुखदेव सोलथ सहित काफी संख्या में ग्रामीण सहित रक्तदाता उपस्थित रहे।

संस्कार प्ले स्कूल में हिंदी, अंग्रेजी व पेंटिंग प्रतियोगिता आयोजित

हरिभूमि न्यूज ⏭चरखी दादरी

संस्कार प्ले स्कूल में विद्यार्थियों की प्रतिभा को निखारने के उद्देश्य से हिन्दी, अंग्रेजी कविता एवं पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। विद्यालय की प्रधानाचार्या अंजू शर्मा ने कार्यक्रम की जानकारी देते हुए बताया कि इस प्रतियोगिता में नन्हे-मुन्ने विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और अपनी कला का प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता के दौरान विद्यालय के विद्यार्थियों ने हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में सुंदर कविताएं प्रस्तुत कीं। जिनमें मुख्य रूप से लाला जी ने केला खाया, मम्मी पापा प्यारे है, दादा जी दादा जी, आम फलों का राजा है, मछली जल की रानी है आदि कविताएं शामिल रही है। जिन्हें सुनकर जिससे सभी श्रोता मंत्रमुग्ध हो गए। कविताओं के माध्यम से बचपन की मासूमियत जैसे विषयों पर अपनी भावनाओं को व्यक्त किया। इसके साथ ही प्रतियोगिता के पेंटिंग सेक्शन में बच्चों ने विभिन्न विषयों जैसे आम, फलों का वृक्ष, टोपी, गुब्बारे, सेब, आदि अन्य शेप के चित्र बनाए।

चरखी दादरी। प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागी विद्यार्थी। *फोटो: हरिभूमि*

खेलो इंडिया पेंचक सिलाट लीग नॉर्थ जोन प्रतियोगिता में खिलाड़ियों ने जीते पदक

खुशी ने सिल्वर व काव्या ने ब्रांज पदक जीता

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

आगरा के एकलव्य स्पोर्टस स्टेडियम में 10 से 12 फरवरी तक हुई एशमिता खेलो इंडिया पेंचक सिलाट लीग नॉर्थ जोन प्रतियोगिता में कोंट रोड स्थित स्थित बीसीएन स्पोर्ट्स अकादमी की खुशी ने सिल्वर व काव्या ने ब्रांज पदक जीतकर अपनी खेल प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन किया है। दोनों खिलाड़ी कोच दीपक कुमार के नेतृत्व में खेल का अभ्यास करती है तथा पहले भी विभिन्न प्रतियोगिताओं में अपने शानदार खेल प्रदर्शन के बल पर अपनी प्रतिभा दिखा चुकी है। दो नों खिलाड़ियों की उपलब्धि से भिवानी के खेलप्रेमियों में खुशी की लहर है। कोच दीपक ने बताया कि एशमिता खेलो इंडिया पेंचक सिलाट लीग नॉर्थ जोन प्रतियोगिता में बीसीएन स्पोर्ट्स अकादमी की खुशी ने सिल्वर व काव्या ने ब्रांज पदक जीतकर अन्य बेटियों को भी खेल के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया है। पेंचक सिलाट एक पारंपरिक एशियाई मार्शल आर्ट है,जो शारीरिक व मानसिक विकास का साधन है।

भिवानी। कोच के साथ पदक विजेता खिलाड़ी। *फोटो: हरिभूमि*

शिक्षा के साथ-साथ खेलों को भी अपनाएं

तकनीक और परंपराएं खिलाड़ियों को हर पहलू में समृद्ध बनाती हैं। उन्होंने बताया कि ऐसी प्रतियोगिताएं युवाओं को शारीरिक व मानसिक रूप से मजबूत बनाती है। इसके अलावा खेलों को अपनाकर बेटियां आज रोजगार के क्षेत्र में भी तरक्की कर रही है, ऐसे में सभी युवाओं विशेषकर बेटियों को पेंचक सिलाट जैसी खेलों का हिस्सा जरूर बना चाहिए। उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वे शिक्षा के साथ-साथ खेलों को भी अपनाएं।

सामाजिक मूल्यों में गिरावट का मूल कारण नशा

हरिभूमि न्यूज ⏭चरखी दादरी

सामाजिक मूल्यों में गिरावट का मूल कारण नशा है। बीड़ी, सिगरेट, शराब व अन्य नशीले पदार्थों के सेवन से मानव की मनोवृति दूषित होती है। जिसका समाज पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

यह उद्गार प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की झोझू कलां व कादमा शाखा के तत्वावधान में नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत महाशिवरात्रि के अवसर पर मेरा गांव नशा मुक्त गांव अभियान के दौरान गोपालवास, ऊण व नौरंगाबास जाटान गांवों में लोगों को संबोधित करते हुए झोझू कलां सेवा केंद्र प्रभारी ब्रह्माकुमारी ज्योति बहन ने व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि नशे के कारण ही भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव पड़ा। जिसने विशेष रूप से हमारे युवा पीढ़ी को प्रभावित कर अपने चंगुल में फंसा लिया। नशे की बदौलत ही युवाओं की दशा और दिशा उनकी दृष्टि, वृत्ति, कृति सब खराब हो गई, तभी ईर्ष्या, द्वेष व घृणा बढ़ने से लड़ाई झगड़ा बढ़े हैं। जिससे हमारे आपसी संबंध टूटने लगे समाज गिरावट की तरफ जान लगा जो आज हम सभी के लिए चिंता का विषय है। क्षेत्रीय प्रभारी राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी वसुधा बहन ने कहा कि अध्यात्म ही हमारी भारतीय संस्कृति व मूल्यों को बचा सकता है। इसलिए हमें हर रोज कुछ समय स्वचिंतन व परमात्म चिंतन के लिए अवश्य से निकलना चाहिए। हर रोज अपना कर्म परमात्म स्मृति में रहकर करना चहिए तभी हमारे कर्म श्रेष्ठ बनेंगे और हम एक नशा मुक्त श्रेष्ठ समाज का निर्माण कर सकेंगे। इस अवसर पर गांव की गलियों में परमात्मा शिव की झांकी व नशा मुक्ति के गीतों नारों द्वारा लोगों को नशामुक्ति का संदेश दिया गया।

चरखी दादरी। गांव में नशा मुक्त संदेश यात्रा निकालते ब्रह्मकुमारी ज बहन। *फोटो: हरिभूमि*

पीएमश्री कन्या विद्यालय में प्रतिभाशाली छात्राओं को किया गया सम्मानित

हरिभूमि न्यूज ⏭लोहारू

शनिवार को पीएमश्री राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में वार्षिकोत्सव का आयोजन किया। प्राचार्या दर्शना कुमारी श्योराण के नेतृत्व में आयोजित वार्षिकोत्सव में पूर्व जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी संतोष नागर ने बतौर मुख्यतिथि तथा बीईओ विजय प्रभा विशिष्ट अतिथि के रूप में शामिल हुई। पूर्व जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी संतोष नांगर ने कहा कि विद्यार्थी जीवन अनमोल है तथा एक विद्यार्थी के रूप में छात्र छात्राओं को कड़ी मेहनत करनी चाहिए। विद्यार्थी जीवन में की गई मेहनत विद्यार्थी के बेहतर भविष्य का निर्माण करती है। बीईओ विजय प्रभा ने कहा कि छात्राएं ने अपनी मेहनत के बल पर विभिन्न क्षेत्रों में बेहतर मुकाम हासिल किया है। प्राचार्या ने कहा कि हमें हमेशा आगे बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहना चाहिए और अपना और विद्यालय का नाम रोशन करना चाहिए। विद्यालय की प्रतिभाशाली छात्राओं रजनी, ज्योति, नेहा, संपत, हिमांशी, प्रिया और मधु, मुस्कान, काफी, तमन्ना, नीलम आदि को सम्मानित किया। मंच संचालन जितेंद्र सिंह ने किया। इस मौके पर जयप्रकाश, रविंद्र कुमार, जयवीर सिंह, रोशन लाल, महेंद्र सिंह, डॉक्टर पवन कुमार, प्रतिभा देवी, डॉ. रेखा कुलहरी, अनीता शर्मा आदि मौजूद रहे।

लोहारू। पीएमश्री कन्या विद्यालय के वार्षिकोत्सव में प्रतिभाशाली छात्राएं व अतिथिगण।

ड्रग्स के दुष्परिणाम की जानकारी दी

- एक दिवसीय एनएसएस शिविर का पीएमश्री विद्यालय बवानी खेड़ा में हुआ आयोजन

हरिभूमि न्यूज ⏭बवानीखेड़ा

बवानी खेड़ा के पीएम श्री राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में एक सफल और ज्ञानवर्धक एक दिवसीय एनएसएस शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में विभिन्न गतिविधियां आयोजित की गईं, जिनका उद्देश्य सामाजिक जागरूकता बढ़ाना और समाज सेवा में छात्रों की भागीदारी को प्रोत्साहित करना था। दिन भर की गतिविधियां छात्र-छात्राओं और स्थानीय समुदाय के लिए लाभकारी रही। कार्यक्रम में छात्रों द्वारा ड्रग्स के दुरुपयोग के विषय पर एक नाटिका (सड़क नाटक) प्रस्तुत किया गया। इस नाटिका के माध्यम से छात्रों ने ड्रग्स के नुकसान और इसके समाज पर पड़ने वाले बुरे प्रभाव को प्रभावी रूप से प्रस्तुत किया। नाटिका ने दर्शकों को जागरूक किया और उन्हें इस समस्या से दूर रहने के लिए प्रेरित किया। एनएसएस अधिकारी कुसुम ने प्राचार्य आनंद शर्मा के मार्गदर्शन में एनएसएस के कर्तव्यों बारे बताया। उन्होंने स्वास्थ्य शिविर स्कूल में एक स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें स्थानीय चिकित्सकों का सहयोग प्राप्त था।

बवानीखेड़ा। एनसीसी शिविर में उपस्थित कैडेटस। *फोटो: हरिभूमि*

सर्वाधिक रक्त मुहैया करवाने पर स्वास्थ्य मंत्री ने डुडेजा को किया सम्मानित

शतकवीर रक्तदाता डुडेजा की मुहिम को मिला सम्मान

- राजेश को कैंसर पीड़ितों के लिए लगभग 15 हजार यूनिट रक्त मुहिया करवाने पर सम्मानित किया गया

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

रक्तदान महादान होता है, रक्त ही एकमात्र ऐसा पदार्थ है, जिसका निर्माण फैक्ट्री में नहीं हो सकता। रक्त की पूर्ति केवल नियमित रक्तदान से ही पूरी हो सकती है। कुछ लोग नियमित रक्तदान को अपने जीवन का अभिन्न अंग बना चुके हैं, ऐसे लोग न केवल रक्तदान से दुसरो की जिंदगी बचा रहे है, बल्कि युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत भी है। राष्ट्रीय कैंसर संस्थान ने शतकवीर रक्तदाता राजेश डुडेजा को कैंसर पीड़ितों के लिए लगभग 15 हजार यूनिट रक्त मुहिया करवाने पर एम्स बाढ़सा झज्जर के छठे स्थापना दिवस पर सम्मानित किया।

भिवानी। शतकवीर रक्तदाता राजेश डुडेजा को सम्मानित करते केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा। *फोटो: हरिभूमि*

हर घर रक्तदाता होना जरूरी

भिवानी में समाज के लिए प्रेरणास्रोत शतकवीर रक्तवीर राजेश डुडेजा के सम्मान के लिए इनका चयन राष्ट्रीय केंसर संस्थान एम्स बाढ़सा की टीम ने भिवानी जिले में सर्वाधिक रक्त उपलब्ध करवाने पर सम्मानित किया। इस अवसर पर केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा ने रक्तदान से जुड़े सभी आयोजकों को रक्त भरपूर मात्रा में उपलब्ध करवाने पर शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर निदेशक आलोक ठक्कर व निदेशक एम श्रीनिवास, डॉ. ललित कुमार व डॉ. दीप्ति रंजन उपस्थित थे। शतकवीर रक्तदाता राजेश डुडेजा ने बताया कि ये सभी रक्तदान शिविर रक्तवीर मनीष वर्मा व अन्य रक्तदाताओं के सहयोग से किए गए। डुडेजा ने कहा कि इंडियन ब्लड सर्कुलेशन विभाग द्वारा एक नारा दिया गया है, हर घर रक्तदाता होना जरूरी है, जिसकी शुरुआत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू ने दिसंबर 2021 में एक सेमिनार के माध्यम से की थी। इसी उद्देश्य को लेकर युवा रक्तदाताओं को जोड़ने का कार्य किया जा रहा है। उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि इस पुनित कार्य में अधिक से अधिक संख्या में रक्तदान कर समाजहित में किए जा रहे हवन में अपनी आहुति देने का कार्य करें।

खबर संक्षेप

विद्यालय के बाद विद्यार्थी बनाए बेहतर भविष्य

भिवानी। सेठ हरनाम दास राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय लोहारी जाटू में ग्यारहवीं और बारहवीं के विद्यार्थियों के लिए प्राचार्य सत्यपाल की अध्यक्षता में काउंसलिंग सैशन रखा गया। स्कूल पास करने के बाद विद्यार्थियों को उनके बेहतर भविष्य के लिए सभी विषयों के बारे में जानकारी दी गई। बच्चों को भविष्य की शिक्षा का चुनाव अपनी रुचि और दक्षता के अनुसार करना चाहिए। प्रवक्ता राजनीतिक विज्ञान समरवीर सिंह ने कहा कि बच्चों को न्यायिक सेवा, प्रशासनिक सेवा, कॉलेज यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर, एनडीए, सीडीएस, एचएसएससी आदि प्रतियोगी परीक्षाओं के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। खेलों में रुचि रखने वाले विद्यार्थियों को इस दिशा में प्रदत कोर्स में दाखिला लेकर बेहतर भविष्य बनाने के लिए सुझाव दिए गए। 12वीं में अच्छे अंक लेने वाले विद्यार्थियों को यूनिवर्सिटी में मिलने वाली छात्रवृत्ति वह अन्य सुविधाओं के बारे में बताया गया।

धोखाधड़ी की तत्काल सूचना 1930 पर दें: डीसी

भिवानी। डीसी महावीर कौशिक ने सोशल मीडिया के दौर में बढ़ते साइबर वित्तीय धोखाधड़ी के मामलों को ध्यान में रखते जिलावासियों से अपील करते हुए कहा कि वे ऐसे मामलों की तत्काल सूचना देने के लिए केंद्रीय गृह मंत्रालय द्वारा चलाई जा रही हेल्पलाइन नंबर 1930 पर संपर्क सकते हैं। डीसी ने कहा कि पिछले कुछ सालों से लोगों में ऑनलाइन शॉपिंग के बढ़ते क्रेज के कारण अक्सर लोग सोशल मीडिया पर बंपर डिस्काउंट, लॉटरी या फिर इनामी विज्ञापनों के झांसे में आ जाते हैं। ऐसे में पहले यह सुनिश्चित कर लें कि इस्तेमाल की जा रही वेबसाइट सुरक्षित है या नहीं। अगर संभव है तो कोशिश करें कि ऑनलाइन साइट्स से सामान मंगवाते समय कैश ऑन डिलीवरी का ऑप्शन चुने। डीसी ने कहा कि आपके साथ किसी प्रकार की साइबर धोखाधड़ी होती है तो आप सबसे पहले हेल्पनाइन नंबर 1930 डायल करें।

अंजली ने बेस्ट एथलीट का जीता खिताब

100 मीटर नींबू रेस, 400 मीटर दौड़ एवं डिस्कस थ्रो में शालू रही अव्वल

खरक के राजकीय महिला महाविद्यालय में पहला खेलकूद उत्सव मनाया गया

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

भिवानी। खरक के राजकीय महिला महाविद्यालय में खेलकूद उत्सव की विजेताओं को पुरस्कृत करते अतिथि व खरक के राजकीय महिला महाविद्यालय में खेलकूद उत्सव की 100 मीटर नींबू रेस में भाग लेती छात्राएं। *फोटो: हरिभूमि*

गांव खरक के महाराणा प्रताप खेल स्टेडियम में शनिवार को राजकीय महिला महाविद्यालय के प्रथम खेलकूद एव पारितोषिक वितरण समारोह का आयोजन किया। इस दौरान 100, 200 और 400 मीटर दौड़, शॉट पूट, ज्वैलीन थ्रो, नींबू चमच रेस, बोरा रेस, लंबी कूद, ऊंची कूद आदि खेलकूद प्रतियोगिताएं करवाई गई। खेलकूद प्रतियोगिता में अंजली ने उत्कृष्ट खेल प्रदर्शन कर सभी प्रतिभागियों पर पछाड़ा और बेस्ट एथलीट खिताब पर कब्जा किया। उद्घाटन समारोह में मुख्यतिथि के रूप में विनोद पहलवान, दिनेश, रजनीश शर्मा, प्रवीण आदि ने शिरकत की। उत्सव की अध्यक्षता प्राचार्य प्रोफेसर त्रिलोकचंद ने की। उत्सव का संयोजन प्रोफेसर सीमा बुमरा, आयोजन सचिव प्रोफेसर मंदीप कुमार ने किया। समापन समारोह में प्रसिद्ध समाजसेवी जयराम सिंह परमार ने शिरकत की। कार्यक्रम का आगाज मार्च पास्ट से हुआ। प्राचार्य ने मुख्यतिथि का परिचय दिया और आभार जताया। साथ ही खिलाड़ियों का उत्साह बढ़ाते हुए कहा कि हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है। खेलकूद मानव शरीर के स्वस्थ रक्त प्रवाह के लिए पाचनतंत्र व श्वसन तंत्र को सुचारू रूप कार्य करने के लिए पर्याप्त शक्ति प्रदान करता है। खेल उत्सव खिलाड़ियों के सपनों को परवाज देने का कार्य करता है। मुख्यतिथि ने महाविद्यालय परिवार की सहयोग भावना, तत्परता तथा छात्राओं के अनुशासन और खेल भावना की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि वर्तमान समय में खेल जगत में वैश्विक स्तर पर हरियाणा के खिलाड़ियों ने अपना दमखम दिखाते हुए तिरंगे की शान को चार चांद लगाए हैं। खेल उत्सव मेरी दृष्टि में खेल व खिलाड़ियों के लिए एक ऐसी प्रयोगशाला का कार्य करते हैं, जिनमें जोश व होश से लबालब खिलाड़ियों का निर्माण होता है और उन्हें बड़े स्तरे पर खेलने की प्रेरणा शक्ति से भरा जाता है। समापन समारोह में मुख्यतिथि के रूप में खिलाड़ियों को सम्मानित किया एवं अपने अनुभव सांझा किए। अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंटकर आभार जताया। डॉ. राजेश कुमार ने कार्यक्रम को सफल बनाने में सबके सहयोग के लिए आभार जताया। इस अवसर पर प्रोफेसर राकेश, प्रोफेसर संजय, प्रोफेसर सुमित, प्रोफेसर गौरव, प्रोफेसर परमानंद, प्रोफेसर सीमा, प्रोफेसर पिंकी, प्रोफेसर मुकेश, प्रोफेसर सुनीता, प्रोफेसर मंजु, प्रोफेसर पवन, प्रोफेसर रूपम, प्रोफेसर धर्मपाल सिंह, प्रोफेसर मोनिका आदि मौजूद रहे।

यह रहे परिणाम

खेलकूद प्रतियोगिता की डिस्कस थ्रो में शालू ने प्रथम, आरती ने द्वितीय व नेहा ने तृतीय स्थान हासिल किया। वहीं 400 मीटर रेस में शालू ने प्रथम, अंजली ने द्वितीय व नेहा ने तृतीय, लांग जम्प में अंजली ने पहला, शालू ने दूसरा व अनीता ने तीसरा स्थान जीता। शॉट पुट में अंजली ने प्रथम, मुस्कान ने द्वितीय व अंजू तृतीय ने प्राप्त किया। 100 मीटर नीम्बू रेस में शालू प्रथम, कंचन द्वितीय व भारती तृतीय स्थान पर रही। खेलों में अपनी प्रतिद्वंद्वियों को मात देकर एवं सर्वश्रेष्ठ खेल प्रदर्शन कर अंजली ने बेस्ट एथलीट का खिताब हासिल किया।

बवानीखेड़ा। बवानीखेड़ा शहर के श्री लाल बहादुर शास्त्री वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में स्थापना दिवस मनाते हुए। *फोटो: हरिभूमि*

बॉल बैलेंस रेस में भूमि, गिलास बैलेंस रेस में दुर्विषा ने मारी बाजी

हरिभूमि न्यूज ⏭बवानीखेड़ा

- श्री लाल बहादुर शास्त्री वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में मनाया वार्षिक खेल दिवस, बच्चों ने दिखाया दमखम

बवानीखेड़ा शहर के श्री लाल बहादुर शास्त्री वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में स्थापना दिवस मनाया गया। इस मौके पर विद्यालय के संस्थापक स्वर्गीय सत्यनारायण कौशिक को याद करते हुए नमन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बवानी खेड़ा क्षेत्र के लोकप्रिय विधायक कपूर सिंह वाल्मीकि जी के बड़े भाई मास्टर राजेश व क्षेत्र के सम्मानित भारतीय सेना के रिटायर्ड गणमान्य सदस्यों ने पहुंच कर कार्यक्रम की शोभा बढाई और अपने पुरे जीवन के अनुभवों को सभी के साथ साँझा किया और बच्चों को देश सेवा के लिए प्रेरित किया। स्कूल प्रबंधन के सभी सदस्यों व प्रिंसिपल सोनिका धींगडा ने मशाल जलाकर कार्यक्रम की शुरुआत की । कार्यक्रम के दौरान छात्रों ने विभिन्न हरियाणवी, पंजाबी गीतों पर नृत्य की सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से सभी को मंत्रमुग्ध किया। खेल कार्यक्रम के दौरान ड्रिल, फ्लैट रेस, रिले रेस, फ्रॉग रेस, बोरी रेस, हर्डल रेस, और इसके अलावा विभिन्न प्रकार के बच्चों के खेल कार्यक्रम में शामिल रहे । इस कार्यक्रम में विभिन्न सदनों के बच्चों ने शानदार मार्च पास्ट प्रस्तुत किया । कार्यक्रम के दौरान बच्चों के दादा और दादी की दौड़ मुख्य आकर्षण का कारण रही। बच्चों के साथ - साथ विद्यालय के अध्यापक गणों ने भी खेल और सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये जिसमें हरियाणवी रागनी और कव्वाली प्रमुख रही बॉल बैलेंस रेस में भूमि गिलास बैलेंस रेस में दुर्विषा डक रेस में कृष ईटिंग बिस्कुट रेस में पूर्वी, निक्कू बर्थडे कैप रेस में मोक्ष बनाना रेस में रोनक गोरिल्ला रेस में यश कप बॉल रेस में दीपांशु वाटर कप रेस में भारत हर्डल चेयर रेस में मानव चिकेन रेस में दीपांशु रिंग रेस में राघ्वी मैडल रेस में गर्वित बॉल रेस में माही कॉइन रेस में काविश आइटम कलेक्ट रेस में श्री बलून रेस में यशिम रोपिंग रेस में रक्षित ने बाजी मारी।

पुलवामा शहीदों को किया नमन

- शहीदों को सम्मान देना निरंतर प्रक्रिया होनी चाहिए : भवानी प्रताप
- 14 फरवरी को काला दिवस एवं पूर्ण अवकाश घोषित करें सरकार : चौहान

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

भिवानी। पुलवामा शहीदों को नमन करते विभिन्न संगठनों के कार्यकर्ता।

नेहरू पार्क स्थित शहीद स्मारक पर विभिन्न सामाजिक संगठनों ने कार्यक्रम का आयोजन किया। इस मौके पर पुलवामा हमले में शहीद हुए वीर शहीदों को पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि अर्पित की। वहीं राष्ट्रीय सम्मान ट्रस्ट के तत्वावधान में पूर्व सैनिक शहीद स्मारक पर एकत्रित हुए तथा पुलवामा हमले की याद में द्वीप प्रज्ज्वलित किए। इस मौके पर ट्रस्ट के संस्थापक नेत्रपाल तंवर ने कहा कि युवा 14 फरवरी को वेलनटाइन डे मनाते है, जबकि वेलनटाईन डे अंग्रेजों का कार्यक्रम है, जो पाश्चात्य संस्कृति को बढ़ावा देता है। उन्होंने कहा कि इस दिन हमारे 40 जवान शहीद हो गए थे तथा देश के प्रत्येक नागरिक को चाहिए कि वह 14 फरवरी को वेलनटाइन डे की बजाय शहीदों की याद में मनाएं, ताकि देश की रक्षा एवं सुरक्षा में अपने प्राणों की आहुति देने वाले शहीदों के प्रति सम्मान भाव प्रकट किया जा सकें। हमारा अपना फाउंडेशन से पहुंचे पूर्व सैनिक महेश चौहान ने भिवानी के समस्त पूर्व सैनिकों की तरफ से सरकार से मांग की कि भारत सरकार व राज्य सरकार 14 फरवरी को काला दिवस घोषित कर इस दिन पूर्ण अवकाश घोषित करें। नप चेयरपर्सन प्रतिनिधि भवानी प्रताप सिंह ने कहा कि शहीदों के बलिदान को जीवनभर याद रखें।

नवीनतम तकनीक अपनाएं किसान: पूर्वमंत्री

- गिगनाऊ के बागवानी उत्कृष्टता केंद्र में दो दिवसीय किसान मेला शुरू

हरिभूमि न्यूज ⏭लोहारू

लोहारु। गिगनाऊ के बागवानी उत्कृष्टता केंद्र में मेले की शुरूआत करते हुए पूर्व मंत्री जेपी दलाल व अन्य। *फोटो: हरिभूमि*

पूर्व कृषिमंत्री एवं भाजपा के वरिष्ठ नेता जेपी दलाल ने कहा कि वे परंपरागत खेती को छोड़ खेती की नवीनतम तकनीक को अपनाएं और अपनी आमदनी बढ़ाएं। उन्होंने कहा कि किसानों को फसल पैदा करने के साथ-साथ प्रोसेसिंग एवं पैकेजिंग पर भी विशेष ध्यान करना होगा, ताकि उनकी फसल न केवल देश के विभिन्न प्रदेशों में बल्कि दूसरे देशों में भी जा सके। इससे फसल के दाम भी कई गुना मिलेंगे। दलाल शनिवार को गिगनाऊ के इंडो इजराइल तकनीक पर आधारित उत्कृष्ट बागवानी केंद्र में आयोजित दो दिवसीय बागवानी मेले के प्रथम दिन शुभारंभ पर किसानों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि हरियाणा पहला प्रदेश है जो सभी फसलें एमएसपी पर खरीद कर रहा है। हरियाणा की कृषि नीति को दूसरे प्रदेश भी अपना रहे हैं। बेहतर कृषि नीति की बदौलत हरियाणा का किसान खुशहाल है। हरियाणा देश का पहला राज्य है, जहां बागवानी फसलों पर सरकार ने बीमा योजना लागू किया गया है और बागवानी फसलों के लिए भावांतर भरपाई योजना भी लागू की गई है। किसानों की खुशहाली के लिए नवीनतम खेती के उपकरण मुहैया की हैं और उपकरणों पर सब्सिडी प्रदान की जा रही है। वहीं टपका सिंचाई को बढ़ावा देने के लिए किसानों को प्रेरित किया जा रहा है। दलाल ने कहा कि इंडो इजराइल तकनीक पर आधारित कृषि का उत्कृष्ट केंद्र न केवल देश, बल्कि विदेशों में भी पहचान स्थापित कर चुका है।

100 स्टॉलें लगाई

उपनिदेशक डॉ. आत्मप्रकाश बताया कि मेले में कृषि, बागवानी की खेती के लिए आधुनिक तकनीक व उपकरणों के प्रदर्शन के लिए विभिन्न विभागों व कंपनियों ने 100 स्टॉलें लगाई हैं। सब्जियों की संरक्षित खेती पॉलीहाउस एवं ओपन फील्ड में दिखाए। किसानों को खजूर की खेती के लिए किसानों को पौध से लेकर बाजार तक की पूर्ण जानकारी दी गई। डॉ. सचिन व डॉ. राजेश ने बताया कि गिगनाऊ केंद्र दक्षिणी हरियाणा के शुष्क क्षेत्र की फसलों मुख्य रूप से खजूर, अमरूद, बेर, स्ट्रॉबेरी की आपूर्ति करेगा।

छात्राओं को किया महावारी स्वच्छता के प्रति जागरूक

चरखी दादरी। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की ओर से गवर्नमेंट गर्ल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल सांवड में महावारी स्वच्छता को लेकर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव संजीव काजला ने मुख्य अतिथि के तौर पर शिरकत की। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव एवं मुख्य न्यायाधीश दंडाधिकारी ने बताया कि महावारी स्वच्छता एक महत्वपूर्ण विषय है, लेकिन इसे अभी भी समाज में उपेक्षित रखा जाता है। समाज में अकसर महावारी को लेकर चुप्पी देखी जाती है, जिससे लड़कियों को आत्मसम्मान की कमी सांस्कृतिक भेदभाव व स्वास्थ्य संबंधित समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसके साथ ही महावारी स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने के लिए जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव ने स्कूल के विद्यार्थियों को हरी झंडी दिखाकर रैली को रवाना किया। सीजेएम ने बताया कि इस मार्च का उद्देश्य लोगों को महावारी स्वच्छता के प्रति जागरूक करना है।

महंत विकास गिरी महाराज का अभिनंदन

हरिभूमि न्यूज ⏭बहल

बहल। प्रयागराज में शिविर लगाकर जनसेवा करने के लिए महंत विकास गिरी का स्वागत करते नागरिक। *फोटो: हरिभूमि*

प्रयागराज में शिविर लगाकर बहल क्षेत्र के श्रद्धालुओं की कुंभ के पवित्र संगम स्नान में सहायता व सेवा करने पर बहल के श्रीअलख आश्रम के महंत विकास गिरी महाराज का बहल के लोगों ने अभिनंदन किया। लोगों ने कहा कि एक महीने से ज्यादा समय तक प्रयागराज में आश्रम के शिविर में बहल क्षेत्र के लोगों की जो सेवा की, वो अविस्मरणीय रहेगी।

लोगों ने कहा कि महंत विकास गिरी ने सच्ची मानवता धर्म निभाकर अनेक श्रद्धालुओं का पुण्य का भागी बनाया है। शनिवार को बहल के श्रीअलख आश्रम में आयोजित कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लोगों ने शिरकत की। उपस्थितजनों ने कहा कि कुंभ स्नान में देश भर से करोड़ों की संख्या में श्रद्धालुओं ने स्नान किया है, ऐसे में बहुत से ऐसे लोग थे, जो पहली बार प्रयागराज गए थे और उनके लिए इतनी भारी भीड़ में स्नान करना बड़ी चुनौती थी, लेकिन आश्रम के महंत विकास गिरी महाराज ने नौ जनवरी को प्रयागराज में शिविर शुरू कर दिया था। वहां पर लोगों ने खाने, पीन, रहने के अलावा उनको घाट तक ले जाकर स्नान करने में जो सहयोग दिया, उसकी वजह से लोगों को बड़ी राहत मिली। इसके अलावा लोगों को बस से प्रयागराज ले जाने में आश्रम की तरफ से जो व्यवस्था की गई थी, उसमें भी अनेक श्रद्धालुओं ने पवित्र संगम में डुबकी लगाकर पुण्य कमाया। लोगों ने महंत विकास गिरी महाराज के प्रयासों की मुक्तकंठ सराहना की।

वितरित किया गंगाजल

प्रयागराज में लगे महाकुंभ मेले में जो लोग किसी वजह से नहीं जा सके, उनको श्रीअलख आश्रम की तरफ से पवित्र गंगाजल वितरित किया गया। आश्रम में उपस्थित लोगों ने गंगाजल को लेकर महंत विकास गिरी का धन्यवाद किया और कहा कि पवित्र जल को अपने विभिन्न मांगलिक कार्यों में उपयोग में लाएंगे। वहीं महंत विकास गिरी ने बताया कि प्रयागराज मेले के उपलक्ष्य में 27 फरवरी से बहल में श्रीमद्भागवत कथा का आयोजन होगा।

विज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में हिंदू मॉडल स्कूल के बच्चों ने दिखाई प्रतिभा

चरखी दादरी। मौड़ी गांव स्थित हिन्दू मॉडल स्कूल में विज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में पांच टीमों ने भाग लिया। विज्ञान विभागाध्यक्ष सुशीला देवी ने बताया कि प्रतियोगिता की रूपरेखा सम्पूर्ण विज्ञान और सामान्य ज्ञान को ध्यान में रखकर तैयार की गई है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों की साइंस विषय में रुचि बढ़ाना और आगामी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तैयार करना रहा। टीम-ई से लकिता, नव्या और माही ने प्रथम, टीम-ए से साक्षी, डिम्पल, दिव्यांशी और दीक्षा ने दूसरा स्थान प्राप्त किया। स्कूल संचालक सोमबीर जाखड़ ने विजेता प्रतिभागियों को सम्मानित किया और अपने संबोधन में कहा कि इस प्रकार की शैक्षणिक प्रतियोगिताएं विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उन्होंने सभी प्रतिभागियों को बधाई देते हुए कहा कि परिश्रम और समर्पण के साथ पढ़ाई करने से सफलता अवश्य मिलती है।

लघु सचिवालय के आस-पास हैं 7 ग्रीन बेल्ट

ग्रीन बेल्टों पर साफ-सफाई का टेंडर जारी

- सफाई होने के बाद सौंदर्यता बढने के साथ हादसों के भय से भी मिलेगी मुक्ति

हरिभूमि न्यूज ⏭भिवानी

भिवानी। ग्रीन बेल्ट में हरे पेड़ों की छंटाई करते हुए। *फोटो: हरिभूमि*

भिवानी शहर की सुंदरता को बढ़ाने के लिए पार्षद संदीप यादव व पार्षद सुभाष तंवर के प्रयासों से हुडा प्रशासन द्वारा ग्रीन बेल्टों की साफ-सफाई का टैंडर जारी किया गया है। जिसके बाद अब जल्द ही शहर की ग्रीन बेल्टों के पास लगे कचरे के ढ़ेरों का उठान होगा तथा पेड़-पौधों की कटाई-छंटाई का कार्य भी पूर्ण कर लिया जाएगा।

जिसके बाद शहर में स्वच्छता व सौंदर्यता बढ़ेगी। बता दे कि भिवानी के लघु सचिवालय के आस-पास करीबन 7 ग्रीन बेल्ट है, जहां पर हमेशा गंदगी का ढ़ेर लगा रहता था प्रशासन का यहां की सफाई व सौंदर्यता की तरफ कोई ध्यान नहीं था। लेकिन बीते दिनों वार्ड नंबर-2 के पार्षद संदीप यादव ने स्थानीय नागरिकों को साथ लेकर इन ग्रीन बेल्टों की सफाई करवाने की मांग प्रशासन से की थी तथा हिसार में हुडा प्रशासन के समक्ष भी इस समाधान की गुहार लगाई थी। जिसके बाद हुडा प्रशासन सचेत हुआ तथा इन ग्रीन बेल्टों की सफाई का काम अब शुरू हो गया है। इस बारे में वार्ड नंबर-2 के पार्षद संदीप यादव ने कहा कि ग्रीन बेल्टों में सफाई के तहत गंदगी का उठान, पेड़ों की कटाई-छंटाई का कार्य किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि ग्रीन बेल्टों की सफाई होने के बाद शहर की स्वच्छता व सौंदर्यता का चार चांद लगेंगे।

कूड़ा-कचरा डालकर शहर को गंदा ना बनाएं

इस मौके पर पार्षद सुभाष तंवर ने कहा कि ग्रीन बेल्टों की साफ-सफाई होने के बाद शहर की सुंदरता बढने के साथ-साथ हादसों के भय से भी मुक्ति मिलेगी। क्योंकि यहां पर उगे पेड़ सडक की तरफ झुके हुए थे, जिससे हादसे होने का भय बना हुआ था। लेकिन अब ग्रीन बेल्ट पर सफाई का टैंडर जारी हो चुका है तथा यहां पर सफाई का कार्य जोरों पर है। उन्होंने नागरिकों से भी आह्वान किया कि वे कही भी कूड़ा-कचरा डालकर शहर को गंदा ना बनाएं।

विद्यार्थियों ने गिगनाऊ मेले का किया भ्रमण

लोहारू। चौधरी बंसीलाल राजकीय महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने शनिवार को गिगनाऊ के अर्ध शुष्क बागवानी उत्कृष्टता केंद्र में आयोजित बागवानी मेले का शैक्षणिक भ्रमण किया। विद्यार्थियों ने मेले में कृषि के नए उपकरणों और नई तकनीकों की जानकारी हासिल कर ज्ञानवर्धन किया। विद्यार्थियों ने हाई-टेक ग्रीनहाउस, ड्रिप इरिगेशन, वर्टिकल फार्मिंग, टिशू कल्चर, जैविक कृषि, जल संरक्षण तकनीक और स्मार्ट एग्रीकल्चर जैसी नवीनतम विधियों के बारे में विशेषज्ञों से विस्तृत जानकारी प्राप्त की। उन्होंने फलों और सब्जियों की उन्नत किस्मों, औषधीय पौधों की खेती और आधुनिक सिंचाई प्रणालियों का भी प्रत्यक्ष अवलोकन किया।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, शॉप नं. 47, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन नं. : 8295157800, 8814999151, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी 10X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2000/- रु. 2500/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज़ पर मान्य। अन्य किसी साईज़ के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
भिवानी : हरिभूमि, शॉप नं. 47, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन : 8814999170, दादरी : 9253681008

बदलते दौर के साथ बदलती लाइफस्टाइल, शामिल होती टेक्नीक और नई सोच के आधार पर अलग-अलग जेनरेशन का नामकरण किया जाता रहा है। इसी सीरीज में विगत 1 जनवरी से जेनरेशन अल्फा को पछाड़कर, जेन बीटा वजूद में आया है। यह जेनरेशन अपनी पुरानी पीढ़ियों से कैसे अलग है, इसकी क्या खासियतें होंगी, जानना बहुत दिलचस्प है।

जेन अल्फा भी हुई पुरानी
आ गई जेनरेशन बीटा

{ कवर स्टोरी
लोकमित्र गौतम }

जेनरेशन बीटा यानी जेन बीटा का आगमन हो चुका है। विगत 31 दिसंबर 2024 को न्यू जेनरेशन की कुर्सी से जेन अल्फा को उतार दिया गया और 1 जनवरी 2025 को इस पर जेन बीटा को बैठा दिया गया। जो लोग कुछ कंफ्यूज हो रहे हों, उन्हें बता दें कि जेन बीटा एक अनुमानित पीढ़ी (हाइपोथीसियल टेक्नोजेनरेशन) है, जो 1 जनवरी 2025 से शुरू हो चुकी है और उसके पहले तक जो जेन अल्फा थी, वह भी एक अनुमानित पीढ़ी ही थी, जिसका वक्त 31 दिसंबर 2024 से खत्म हो गया।

डिफरेंट जेनरेशन का कॉन्सेप्ट

यह एक निश्चित समय अवधि के तकनीकी विकास, जीवनशैली, काम-काज, सोच और भविष्य दृष्टि को इस समय अवधि में पैदा होने वाली पीढ़ी के जरिए देखने का तरीका है। दूसरे शब्दों में यह समाजशास्त्रीय चश्मे से एक निश्चित समय अवधि और उस अवधि में पैदा हुए लोगों के जरिए दुनिया को देखने की नजर है। यह सिलसिला यूं तो पिछली सदी के 50 के दशक से ही शुरू हो गया था, जब उस दौर की नई पीढ़ी को हिप्पी या यिप्पीज के रूप में चिन्हित किया जाने लगा था। लेकिन सही मायने में 80 के दशक से यह सिलसिला शुरू हुआ, जब अलग-अलग समय अवधि को उस दौरान दुनिया में आई नई पीढ़ी के जरिए देखने की शुरुआत हुई। इसलिए इन पीढ़ियों के कृत्रिम विभाजन को इस तरह जानने और पढ़ने की कोशिश करनी चाहिए कि अलग-अलग दशकों की, अलग-अलग पीढ़ियों की आखिरकार खूबियां क्या हैं? कुल मिलाकर जब इस नजरिए से हम जेन बीटा की बात करते हैं तो फिलहाल इसका मतलब यह अनुमान लगाने से है कि जेनरेशन बीटा यानी 2025 से पैदा होने वाली नई पीढ़ी अपनी पुरानी पीढ़ियों से कैसे भिन्न होगी?

ऐसी होगी जेन बीटा

चूंकि जेनरेशन बीटा, पूरी तरह से सुपर टेक्नोलॉजी युग में पैदा हो रही है, इसलिए यह टेक्नोलॉजी में इनोवेटेड लाइफस्टाइल वाली जेनरेशन होगी। आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस, रोबोटिक, ऑगमेंटेड रिएलिटी/वर्चुअल रिएलिटी और लाखों तरह की स्मार्ट डिवाइसेस, इस पीढ़ी की रोजमर्रा की जिंदगी का हिस्सा होंगी। यह पहली ऐसी जेनरेशन होगी, जिसके सोचने, समझने, बर्ताव करने और समग्रता से जीवन जीने की सभी प्रक्रियाओं में टेक्नोलॉजी की भरमार होगी।

हाइपर कनेक्टेड जेनरेशन

जेन बीटा वह पीढ़ी होगी, जो लगभग पूरी दुनिया से एक साथ फिजिकल भी और वर्चुअल भी, एक ही समय पर कनेक्ट होगी। लेकिन संकट यह होगा, चूंकि इसने दोनों ही दुनियाओं को एक साथ एक ही समय में देखा है, इसलिए यह दोनों में बहुत फर्क नहीं कर पाएगी। यह पीढ़ी दोनों के साथ ही सहज होगी। साथ ही इस जेनरेशन की पहचान, किसी एक संस्कृति की न होकर मल्टी कल्चरल पीढ़ी की होगी। इंटरनेट और ग्लोबलाइजेशन के कारण न सिर्फ यह पीढ़ी, पुरानी किसी भी पीढ़ी के मुकाबले कहीं ज्यादा कल्चरल डायवर्सिटी और ग्लोबल थॉट के साथ बड़ी और खड़ी होगी बल्कि इसके लिए अपनी और पराई संस्कृति में उस तरह से फर्क कर पाना मुश्किल होगा, जैसे अब तक की पीढ़ियां करती रही हैं। इस जेनरेशन में हिंदी बोलने वाले इलाकों के युवाओं के गानों की भी पहली पसंद अमेरिकन और अफ्रीकन रैप हो सकती है और अमेरिकन यंगस्टर्स की भी पसंदीदा मिठाइयों में जलेबी और इमरती शामिल हो सकती है। क्योंकि इस नई बीटा जेनरेशन में कल्चरल अलगाव किसी भी स्तर पर उतना नहीं होगा, जैसा पहले होता रहा है।

ये भी होंगी इनकी खासियतें

यह जेनरेशन, आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस के व्यावहारिक दौर में पैदा होगी, उसी के साथ पलेगी-बढ़ेगी, शिक्षित होगी, हेल्थ और एंटरटेनमेंट की भागीदार भी होगी। यह जेनरेशन पिछली पीढ़ियों के मुकाबले टेक्नोलॉजी की समझ को लेकर इस तरह से अलग होगी कि पिछली पीढ़ियां, जहां नई टेक्नोलॉजी को समझने वाली थीं, वहीं यह पीढ़ी टेक्नोलॉजी को बदलने वाली होगी। इस पीढ़ी का एक और बड़ा फर्क सबको दिखाई देगा, वह है इस पीढ़ी की परिवार संरचना में आया जबर्दस्त बदलाव। यह पीढ़ी पूरी तरह से डिजिटल परिवार संरचना वाली होगी। इसका पारिवारिक गठन बेहद लचीला होगा, जहां पुरानी सामाजिक संरचनाएं करीब-करीब नहीं मिलेंगी।

कह सकते हैं कि 1 जनवरी 2025 से शुरू हुई जेन बीटा, जेन अल्फा (2010 से 2024) से तो मीलों आगे होगी ही। साथ ही अपनी पूर्वज पीढ़ियों जैसे एक्स, वाई, जेड से तो यह लगभग प्रकाशवर्ष के फासले पर होगी। इसके शायद ही कोई लक्षण उन पीढ़ियों से मिलेंगे। लब्बोलुआब यह कि जेन बीटा अब तक की सबसे मॉडर्न, सबसे ज्यादा ग्लोबल और जीवनशैली के मामले में सबसे तेज रफ्तार होगी। *

एन्वॉयर्नमेंट को लेकर होगी अवेयर

कुछ दशकों पहले तक इंसान को धरती की जिस एक चीज को लेकर बेहद संवेदनहीन देखा गया था, वह पर्यावरण हुआ करता था। पिछली सदी के 50 के दशक में तो जब दूसरे विश्व युद्ध के बाद युद्ध से तहस-नहस दुनिया के पुनर्निर्माण का दौर शुरू हुआ, तो इसकी सबसे बड़ी कीमत पेड़ों, जंगलों, नदियों और समुद्र आदि को चुकानी पड़ी। दरअसल, उस समय यह संवेदना ही नहीं थी कि विकास के लिए पेड़ों की अंधाधुंध कटाई, नदियों में हर तरह के गंदे और जहरीले पानी को बहाना कहीं से गलत भी है। इसी तरह समुद्र का अंधाधुंध दोहन आदि तो उस समय, विकास और प्रगति की निशानी थी। लेकिन जब इस सबकी अति हो गई तो पता चला कि इंसान ने अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार ली है और फिर शुरू हुआ पर्यावरण के प्रति संवेदना जगाने का सिलसिला। लेकिन विकास और पर्यावरण विनाश के बीच वैचारिक रूप से फंसी बुनियादी पुरानी पीढ़ियां पर्यावरण के प्रति उतनी संवेदनशील नहीं हो सकती थीं, जितनी जरूरत थी। लेकिन यह जेन बीटा, पर्यावरण को लेकर बेहद संवेदनशील होगी। यह पैदा होने के साथ ही पर्यावरण के महत्व को समझने के लिए मजबूर होगी और शुरू से ही इसके अनुकूल जीवन जीने की कोशिश करेगी।

समझदारी से करनी होगी
जेन बीटा की पैरेंटिंग

टेक्नोबेस्ड लाइफस्टाइल के बढ़ते चलन की वजह से नई जेनरेशन के बच्चों की पैरेंटिंग भी किसी चैलेंज से कम नहीं है। जेन बीटा के बच्चों की पैरेंटिंग करते समय पैरेंट्स किन बातों का ध्यान रखें, आप सभी को जरूर मालूम होना चाहिए।

{ सजेशन
रजनी अरोड़ा }

इस साल की शुरुआत में मार्क मैक्रिंडल और वैज्ञानिकों द्वारा मानव जगत के इतिहास में नई पीढ़ी 'जेन-बीटा' की घोषणा की गई। यानी पहली जनवरी 2025 के बाद पैदा होने वाले बच्चों को जेन-बीटा का माना गया है। यह वो जेनरेशन है, जो हाई-टेक डिजिटल वर्ल्ड में जन्म ले रही है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई), ऑटोमेशन, रोबोटिक्स, मेटावर्स और स्मार्ट डिवाइसेज उनकी जिंदगी का मुख्य हिस्सा होंगे। हालांकि जेन-बीटा के बच्चे दूसरों से अपेक्षाकृत अधिक स्मार्ट और बुद्धिमान होंगे। फिर भी उन्हें जिंदगी के विभिन्न पहलुओं के साथ सामंजस्य बिठाने में कई तरह की समस्याओं का सामना भी करना पड़ सकता है। ऐसे में निश्चय ही पैरेंट्स की जिम्मेदारी बढ़ जाएगी। उन्हें खुद अपडेट रहना होगा और पैरेंटिंग की अलग एप्रोच अपनानी होगी ताकि इन बच्चों की ओवरऑल डेवलपमेंट (शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक विकास) अच्छी तरह हो सके।

बैलेंस्ड स्क्रीन टाइमः जेन-बीटा बच्चों को छुटपन से ही डिजिटल टूल्स और स्क्रीन का एक्सपोजर मिलेगा। वर्चुअल दुनिया में ज्यादा समय बिताने से उनके शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक असर हो सकता है। डिजिटल ओवरलोड के कारण बच्चों में फोकस की कमी, नींद की समस्या और आंखों की थकान बढ़ सकती है। ऐसे में पैरेंट्स को टेक्नो-बाउंड्रीज तय करनी होंगी। बचपन से ही बच्चों को स्क्रीन टाइम और रियल लाइफ में बैलेंस बनाने, नियमित रूप से डिजिटल डिटॉक्स करने, नो स्क्रीन जोन का पालन करने, सोने से एक घंटे पहले स्क्रीन बंद करने जैसी हेल्दी हैबिट्स विकसित करनी होंगी। स्क्रीन का उपयोग केवल मनोरंजन के लिए न करके, सीखने और रचनात्मकता को बढ़ावा देने के लिए करना होगा। दोस्तों से मिलने-जुलने, आउटडोर गेम्स खेलने और फिजिकली एक्टिव रहने के लिए प्रोत्साहित करना होगा।

मेंटल हेल्थ का रखना होगा ध्यानः डिजिटल टेक्नोलॉजी के एक्सपोजर के कारण जेन-बीटा के बच्चों में स्ट्रेस, एंग्जाइटी, अकेलापन जैसी मानसिक समस्याएं बढ़ सकती हैं। पैरेंट्स को अपने बच्चों के भावनात्मक और मानसिक स्तर पर नजर रखनी होगी। दोस्ताना और ओपन कम्युनिकेशन का रवैया अपनाना होगा ताकि बच्चे अपनी भावनाओं और समस्याओं के बारे में खुलकर बात कर सकें। मानसिक रूप से संतुलित और शांत रहने के लिए उन्हें बचपन से ही माइंडफुलनेस आधारित एक्टिविटीज करने और नियमित मेडिटेशन करना सिखाना होगा।

सोशल स्किल्स को बढ़ावा देनाः संभव है कि जेन-बीटा के बच्चों के विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर वर्चुअल फ्रेंड्स ज्यादा, असल जिंदगी में कम दोस्त होंगे। एआई चैटबॉक्स जैसे ऑनलाइन कम्यूनिकेशन टूल्स का ज्यादा इस्तेमाल करने की आदत उनमें हो सकती है। एकल परिवार के बढ़ते ट्रेंड और वर्किंग पैरेंट्स द्वारा पर्याप्त समय न दे पाने के कारण जेन-बीटा बच्चों में भावनात्मक जुड़ाव की कमी हो सकती है। जिसके चलते उन्हें नाते-रिश्तेदारों यहां तक कि हम उम्र बच्चों के साथ बातचीत करने, मिलने-जुलने या संबध स्थापित करने में दिक्कत आ सकती है। अकेलेपन का शिकार हो सकते हैं। इसलिए जेन-बीटा बच्चों में इमोशनल बॉन्डिंग और सोशल स्किल विकसित करने के लिए पैरेंट्स को बचपन से ही ध्यान देना होगा। न केवल रिश्तों और नैतिक मूल्य का महत्व समझाने के लिए नियमित तौर पर फैमिली टाइम बिताना होगा, बल्कि रियल वर्ल्ड में सोशल कनेक्शन बनाने को अहमियत देनी होगी। स्कूल में होने वाले कार्यक्रमों, ग्रुप एक्टिविटीज, आउटडोर एक्टिविटीज करने, दूसरे बच्चों के साथ खेलने, त्योहारों, फैमिली या सोशल गैदरिंग में ज्यादा से ज्यादा शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करना होगा।

क्रिएटिविटी को देना होगा बढ़ावाः जेन-बीटा बच्चों के लिए नई शिक्षण तकनीकों को अपनाना और इंटरैक्टिव लर्निंग तकनीक अधिक प्रभावी होगी। मेमोरी-बेस्ड लर्निंग के बजाय कॉग्निटिव स्किल्स विकसित करनी होगी। यानी रटने की बजाय समस्या को हल करने की क्षमता बढ़ाने और बच्चों में आजीवन सीखने की आदत डालनी होगी। क्रिटिकल-थिंकिंग, प्रॉब्लम-सॉल्विंग, इनोवेशन या क्रिएटिविटी का विकास करना होगा। इसके लिए पैरेंट्स को उन्हें पजल्स, प्रोजेक्ट, दिमागी कसरत वाली एक्टिविटीज ज्यादा करानी होंगी।

डिजिटल सेफ्टी की देनी होगी जानकारीः एआई के जमाने में जेन-बीटा बच्चे को सोशल मीडिया और इंटरनेट के खतरों का सामना भी करना पड़ सकता है। जिसका असर उनकी पर्सनालिटी और मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ सकता है। इससे बचाने के लिए पैरेंट्स को उन्हें सोशल मीडिया का सही इस्तेमाल सिखाना होगा। उन्हें शुरू से ही साइबरबुलिंग, मिसइंफॉर्मेशन और प्राइवेसी कंसर्न जैसे ऑनलाइन खतरों के बारे में जागरूक करना होगा। पासवर्ड की सुरक्षा, अजनबियों से ऑनलाइन बात न करना, डाटा चोरी से बचाव जैसे साइबर सिक्योरिटी के बारे में जानकारी देनी होगी। *

(सर गंगा राम अस्पताल, नई दिल्ली में सीनियर साइकोलॉजिस्ट, डॉ. इमरान नूरानी से बातचीत पर आधारित)

{ गजल
डॉ. माणिक विश्वकर्मा 'नवरंग' }

बुरा लगता है हर मंजर

कसर छोड़ी नहीं हमने किसी की कद्रदानी में
बुरा लगता है हर मंजर जियादा बद्गुमानी में

समय से पहले मुरझाने लगीं कलियां गुलिस्तां में
नहीं महफूज है खुशबू किसी भी इत्रदानी में

हजारों लहरें इठलाती हैं बलखाती हैं मर्जी से
किनारे चाह कर भी बह नहीं पाते रवानी में

किसी की दास्तां में हम शुरू से आखिर तक थे
कहें क्या रह गए गुमनाम अपनी ही कहानी में

गुलामों के सिवा कोई नजर आया नहीं अब तक
मिला ना एक भी खुद्दार हमको राजधानी में

भरी है गंदगी पूरे शहर में इन दिनों 'नवरंग'
टिकी है सबकी उम्मीदें फकत इक रातरानी में

{ कहानी
शुभदा मिश्र }

उसके एक कान का टॉप्स कहीं गिर गया, वह खोए टॉप्स की गहरी चिंता में डूब गई। ऐसी डूबी कि कुछ और सूझ ही नहीं रहा था। एक मनोवैज्ञानिक कहानी।

मनमीत रे

मेरा जी धक से रह गया!

डॉ. सक्सेना के क्लीनिक में बैठी थी मैं। ठंड की सुबह। गर्म शॉल से स्वयं को अच्छी तरह ढंके हुए कि सिर से शॉल सरक गई। मैंने सिर फिर ठीक से ढंकना चाहा कि मेरा हाथ कान को छू गया। दाहिना कान। मुझे लगा कि कान का टॉप्स नहीं है। टॉप्स यानी कर्णफूल। मैंने कान अच्छे से टटोला। बायां कान भी टटोल लिया। बाएं में था टॉप्स। दाएं में नहीं।

तत्क्षण शॉल उतार कर देखा। झाड़कर देखा। अपनी साड़ी, ब्लाउज सब अच्छी तरह टटोल कर देखा। शायद कहीं उलझ गया हो। आस-पास देखा। सोफे के नीचे देखा। कहीं गिर गया हो। नहीं कहीं नहीं था। मरीजों से भरा हॉल। सब अपनी परेशानियों में डूबे। गंभीर माहौल। मेरी हलचलों से गंभीरता भंग होती। सो फिर से शॉल अच्छी तरह ढंक सिर झुकाकर बैठ गई। सदमे में घिरी।

कहां गिरा होगा, वह नन्हा-सा चमकीला टॉप्स। घर से निकल कर ऑटो में बैठते समय। ऑटो से उतर कर स्टेशन में। स्टेशन से प्लेटफॉर्म में, ट्रेन में। यहां रायपुर पहुंच कर ट्रेन से उतरते समय, ऑटो में बैठ यहां क्लीनिक आते समय। हर जगह, हर कदम पर तो भीड़-भाड़। हड़बोंग। गिर गया होगा, वह बटन सा छोटा। वस्तु कैसे कह दूं मैं। तिलिस्म है वह तो। अनजान चेहरों की सुंदरता बढ़ाने वाला। असुंदर चेहरों में भी सुंदरता ला दे। निश्चय ही वह किसी सिद्ध कलाकार की गढ़ी कलाकृति। हाय, कहां गया! उस एक अकेले की तो कोई कीमत भी नहीं। पता होता, कहां गिरा है, तो दूसरा भी टपका देती। किसी के काम तो आता।

अपना सदमा और उसकी अंधेरी नियति! अवसाद के काले जल में डूब गई मैं। टॉप्स मां ने दिए थे। मां के आशीर्वाद की तरह साथ लगे रहते। दुख की मारी ऐसे ही आस-पास, बाजार हाट, कहीं भी चली जाती। पर जब किसी 'शुभ मंगल' कार्यक्रम में जाना होता तो मुझे स्वयं अखरने लगता। लगता, सूने कान चेहरे को और सूना बना रहे हैं। कोई पूछ भी देती, 'कानों में कुछ पहना क्यों नहीं?' एक शरारती ने तो एक बार चर्चा ही छेड़ दी कि कानों के जेवर नारी मुखड़े के आवश्यक अंग हैं। गले में चाहे हीरे का हार पहन लो, पर कान सूना, तो हार बेकार।

अजूबाओं को छोड़ दें, तो हर धर्म, हर जाति, हर उम्र की महिलाएं कानों में कुछ न कुछ पहनती हैं, चाहे वह डॉक्टर हों, नर्स हों, पुलिस या सेना में हों, चाहे वह मंत्री ही क्यों न हों। और मेरा मन भी कहने लगा कि वाकई मुझे कान में पहनना चाहिए। मैं एक महिला आभूषण विक्रेता के पास पहुंची कि मुझे मेरी उम्र और व्यक्तित्व के अनुरूप कोई छोटा सा टॉप्स दें। ज्यादा कीमती न हो। उसने बहुत खोजकर इस टॉप्स की जोड़ी को निकाला। बटन-सा छोटा। गोल। परिधि में ज्योति बिंदु से चमकते श्वेत नग। केंद्र में दमकता लाल नगीना। आश्वस्त किया, 'सोने का नहीं है, पर सोने से कम भी नहीं है मैम।'

मैंने देखा, मां के उस खानदानी जड़ाऊ टॉप्स-सा तो नहीं ही, पर है बेचारा एक अच्छा विकल्प।

मैंने उस विकल्प को समुचित आदर दिया। कहीं जाऊं तो प्रेम से पहन लेती। इधर काफी दिनों से मैं बाहर कहीं आती-जाती नहीं थी। वजह थी, पैरों में तकलीफ। जाना जरूरी हो तो किसी को साथ लेना पड़ता। मुझे अपने आस-पास के लोग बहुत व्यस्त नजर आते। बच्चे, बूढ़े, जवान, सभी। पर वे कहते, 'अकेले जाने का खतरा मत उठाइएगा, हमें खबर कर दीजिएगा।' मैं कहती, 'आप लोग बहुत व्यस्त रहते हैं।' उनका कहना होता, 'इससे क्या, हम समय निकाल लेंगे।' मैं और भी संकोच में पड़ जाती। ये अपने कारोबार से, बीवी-बच्चों से, अपने जरूरी कार्यक्रमों से समय निकालेंगे। मेरे कारण। यह ठीक नहीं। सो मैं जहां जाना जरूरी होता तो किसी को बिना बताए निकल जाती। अभी भी मैं बिना किसी को बताए चली आई थी।

डॉक्टर के पास आना बहुत जरूरी था। कारण आंखों में भीषण तकलीफ। महीने भर से धुंधला दिखने लगा था। अक्षर तो पढ़े ही न जाते। काले धब्बे दिखते। आंखों के भीतर सुई-सा चुभता रहता। सूजन अलग। स्थानीय डॉक्टरों ने जवाब दे दिया। रायपुर आना पड़ा डॉक्टर सक्सेना के पास। वह प्रसिद्ध नेत्र रोग विशेषज्ञ हैं। मुलाकात के लिए पहले से ही समय लेना पड़ता है। लिया समय। पहुंची। मरीजों की भीड़। एक तरफ बैठ गई और मुझे घेर लिया टॉप्स के सदमे ने। 'हाय कहां पड़ा होगा बेचारा धूल गर्द खाता। कुछ आभास हो जाए तो अभी दौड़ कर ढूंढ़ लाऊं... कहां होगा...कहां', तभी नर्स ने नाम पुकारा, 'रोशन भाई।' मेरे बगल वाला मरीज उठ कर भीतर गया।

'अरे बाप, इसके बाद मेरा नंबर। मुझे तो कुछ याद ही नहीं आ रहा है डॉक्टर को क्या बताना है।' मेरे दिमाग में तो छाया हुआ है टॉप्स। टॉप्स-टॉप्स और टॉप्स। कैसे छूटे ये टॉप्स? कि जैसे मन ही बोल उठा, 'सच में किसी सहेली को साथ लाना था मुझे।' सहेली होती तो समझाती, 'अरे ऐसा कौन-सा कीमती था। दूसरा ले लेना।' नहीं समझाती तो लताड़ती जमकर, 'इतनी ठंड में मुंह अंधेरे उठकर, गाड़ी-घोड़ा पकड़ कर, गिरते-पड़ते पहुंची हो डॉक्टर के पास। डॉक्टर को यही बताने के लिए कि डॉक्टर साहब मेरा टॉप्स खो गया। ऐसा सुंदर डॉक्टर साहब... कि उसके जैसा...। मूर्ख, एक-एक मिनट कीमती है डॉक्टर का। सैकड़ों लोग लाइन में लगे हैं। भड़केंगे तुम पर। चल बता... तकलीफ कब से शुरू हुई? धुंधला दिखना कब से शुरू हुआ? सूजन कब से आई? कौन सी दवाई डाली थी? पिछले डॉक्टर का पुर्जा...?'

और मैं जल्दी-जल्दी सोचने लगी... मुझे डॉक्टर को क्या-क्या बताना है। *

{ पत्रिका चर्चा / विज्ञान भूषण }

निकट का कथा विशेषांक

लगभग दो दशक से प्रकाशित हो रही पत्रिका 'निकट' का नया अंक-40, कथा विशेषांक है। आकांक्षा पारे काशिव के अतिथि संपादन में आया यह अंक युवा, मध्य और वरिष्ठ पीढ़ी के लेखकों की कहानियों के सुंदर कोलाज जैसा है। वरिष्ठ कथाकार ममता कालिया की कहानी 'मक्खन खाना घातक है' वृद्धावस्था में भी क्षुद्र आकांक्षाओं से ग्रस्त एक अध्यापक की मनोस्थिति को सामने लाती है तो राजेंद्र दानी ने 'मौत की उलटबांसी' में मृत्यु के भय का सहज और सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया है। प्रियंका ओम ने अपनी कहानी 'सात साल उनतीस दिन' में अपने पति की क्रूरता को सालों सहने वाली एक स्त्री के मनो-कायांतरण का चित्र उकेरा है। सुशांत सुप्रिय की कहानी 'एक उदास सिंफनी' उदासी से भरी प्रेमकथा के समानांतर कई सामाजिक विमर्श को भी सामने लाती है। अन्य सभी कहानियां भी पठनीय हैं। कुल सत्रह कहानियों के अलावा प्रियदर्शन का नाटक 'एक दिन बदलेगा संसार देखना', विगत वर्ष साहित्य के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित लेखिका हान कांग पर रश्मि भारद्वाज के लेख समेत मार्टिन जॉन और सुभाष नीरव की लघुकथाओं से यह अंक और समृद्ध हो गया है। *

पत्रिकाः निकट-40 (कहानी विशेषांक),
संपादकः कृष्ण बिहारी, **मूल्यः** 50 रुपए

कल्चरल इवेंट / धीरज बसाक

हर साल की तरह इस साल भी ताज नगरी आगरा में होने वाले भव्य ताज महोत्सव की तैयारियां जोर-शोर से चल रही हैं। आगामी 18 फरवरी से 2 मार्च तक चलने वाला यह सांस्कृतिक महोत्सव, इस आयोजन का 34वां संस्करण होगा। इस भव्य आयोजन की महत्ता और इस बार की कुछ प्रमुख विशेषताओं पर एक नजर।

बहुरंगी संस्कृति की छटा बिखेरता भव्य ताज महोत्सव

ताज महोत्सव न केवल आगरा या उत्तर प्रदेश बल्कि समूची भारतीय संस्कृति की विविधता को संजोता है और विश्व पटल के सामने इसे प्रस्तुत करता है। इसलिए यह भले ताज महोत्सव के नाम से जाना जाता हो, लेकिन यह वास्तव में समूची भारतीय संस्कृति का विराट महोत्सव होता है। इसमें देश भर के लोक कलाकार और संगीत मर्मज्ञों के साथ हर तरह के कला रसिक आते हैं। इस कारण ताज महोत्सव हाल के दशकों में देश की संस्कृति को सहेजने, संवारने और दुनिया के सामने प्रस्तुत करने का महत्वपूर्ण आयोजन बन गया है। यही कारण है कि बड़ी संख्या में देशी-विदेशी पर्यटक ताज महोत्सव के दौरान यहां पर्यटन के लिए आना पसंद करते हैं। इस साल आयोजित होने वाले ताज महोत्सव की थीम है-धरोहर। जैसा कि थीम से जाहिर है, ताज महोत्सव में इस बार भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को प्रमुखता से प्रस्तुत किया जाएगा।

दशकों से हो रहा आयोजन

गौरतलब है कि ताज महोत्सव की शुरुआत 1992 में उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग द्वारा की गई थी और इसका उद्देश्य भारतीय कला और संस्कृति की विश्व स्तर पर छटा बिखेरने के साथ-साथ ताजमहल देखने आने के लिए देसी-विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करना था। इतने वर्षों के बाद कहा जा सकता है कि यह महोत्सव आयोजन के अपने उद्देश्यों में सफल साबित हुआ है।

उत्कृष्ट हस्तशिल्प की प्रदर्शनी

ताज महोत्सव देश का विरल सांस्कृतिक महोत्सव है। इसकी कुछ विशिष्ट खासियतें हैं। आगरा में निर्मित कला और शिल्प ग्राम में आयोजित हस्तशिल्प प्रदर्शनी भी उनमें से एक है। यहां भारत के कोने-कोने से शिल्पकार अपनी उत्कृष्ट कलाकृतियों का प्रदर्शन करने आते हैं। सहारनपुर की लकड़ी के खिलौने और विभिन्न तरह की नक्काशी की हुई वस्तुएं, खुर्जा के मिट्टी के बर्तन, लखनऊ की चिकनकारी और वाराणसी की रेशम की साड़ियां करीब-करीब हर बार इस महोत्सव के मुख्य आकर्षण की वस्तुएं होती हैं।

जुटते हैं लोक कलाकार-संगीतज्ञ

ताज महोत्सव में देश भर के लोक कलाकार और शास्त्रीय संगीत के मर्मज्ञ अपनी प्रस्तुतियां देते हैं। इससे महोत्सव की शोभा और भी बढ़ती है। इसे देखने का आनंद लेने के लिए देश-दुनिया से बड़ी संख्या में कला और संगीत के कद्रदान यहां आते हैं। ताज महोत्सव वास्तव में भारत की विविध संस्कृतियों का अद्भुत संगम है।

पारंपरिक व्यंजनों का स्वाद

कला और संगीत के साथ-साथ ताज महोत्सव, अपने लजीज व्यंजनों के प्रदर्शन के लिए भी जाना जाता है। इस महोत्सव में करीब-करीब सभी राज्यों के पारंपरिक व्यंजनों के स्टॉल लगाए जाते हैं, जहां महोत्सव में आए आगंतुक तरह-तरह के स्वादिष्ट व्यंजनों का स्वाद लेकर आनंदित होते हैं।

इस बार होगा काफी कुछ नया

इस बार का ताज महोत्सव कई नए कार्यक्रमों के साथ होगा, जो इसे पिछले वर्षों के मुकाबले और अधिक रोमांचक और दर्शनीय बनाएंगे। इस महोत्सव में पहली बार इस साल बर्ड फेस्टिवल का आयोजन किया जाएगा। हॉट एयर बैलून शो भी इस महोत्सव का हिस्सा होगा। इसके अलावा ड्रोन शो, विंटेज कार रैली और पतंग महोत्सव का आयोजन भी इस बार इस महोत्सव में चार चांद लगाएंगे। पिछले कई सालों से इस महोत्सव में एक साहित्य कोना की भी जरूरत महसूस की जा रही थी। इस साल इस महोत्सव में साहित्य प्रेमियों के लिए भी विशेष कार्यक्रम होंगे। इस महोत्सव का एक बड़ा आकर्षण बॉलीवुड के प्रसिद्ध गायक कैलाश खेर भी होंगे, जो ओपेन स्पेस मंच पर अपनी सुरीली प्रस्तुति देंगे। सदर बाजार ओपेन स्पेस मंच, यमुना व्यू प्वाइंट, ताज व्यू गार्डन और आई लव सेल्फी प्वाइंट जैसे स्थानों पर भी इस बार महोत्सव के विभिन्न आयोजन संपन्न होंगे। हाल के सालों को देखें तो इस साल का ताज महोत्सव पहले से कहीं ज्यादा भव्य और कहीं ज्यादा विराट आयोजन होगा।

बड़ी संख्या में आते हैं पर्यटक

हाल के सालों में ताज महोत्सव के दौरान यहां पूरे साल में सबसे ज्यादा पर्यटक आते हैं। सच बात तो यह है कि पर्यटकों की भारी आवक को देखते हुए ही इस जश्न को अब पूरे 10 दिन मनाते हैं। पहले यह 10 दिनों तक चलने वाला महोत्सव नहीं होता था। लेकिन इसकी मांग जिस तरह से देशी-विदेशी पर्यटकों के बीच बढ़ी है, उस कारण यह महोत्सव देश की समृद्ध संस्कृति का पर्याय तो बन ही गया है, आगरा शहर की अर्थव्यवस्था का बड़ा स्रोत भी बनकर उभरा है। माना जाता है कि ताज महोत्सव के दौरान यहां बड़ी संख्या में देश-विदेश से आने वाले पर्यटकों से आगरा शहर की आय में भारी वृद्धि होती है। *

तैयार है आयोजन स्थल

हर साल इस महोत्सव के लिए कई महीनों पहले ही भाग लेने वाले कलाकारों का चयन कर लिया जाता है और वे महोत्सव शुरू होने के पहले ही आयोजन स्थल शिल्पग्राम में पहुंचने लगते हैं। इस बार के ताज महोत्सव का आयोजन शिल्पग्राम के साथ-साथ ताज खेमा, ग्यारह सीढ़ी पार्क और फतेहपुर सीकरी सहित कई जगहों पर आयोजित होगा। जिलाधिकारी अरविंद मल्लप्पा बंगारी के मुताबिक आयोजन की सारी तैयारियों को पूरा कर लिया गया है। महोत्सव के दौरान हर तरह की सुरक्षा की चाकचौबंद व्यवस्था का इंतजाम भी किया जा चुका है।

चाहे आप किसी भी सेक्टर/कंपनी में जॉब करते हों, प्रमोशन और इंक्रीमेंट के लिए हार्ड वर्क के साथ-साथ और भी कई बातें मायने रखती हैं। कौन-सी हैं वो बातें, आप जरूर जानना चाहेंगे।

हार्ड वर्क + स्मार्ट स्ट्रेटजी ईजिली मिलेगा प्रमोशन

सेल्फ इंप्रूवमेंट

शिखर चंद जैन

अमित ने अपने कुलीग मुकुंद से जब निराश होकर कहा, 'यार, काम तो हम भी कम नहीं करते। बॉस के दिए हुए सारे प्रोजेक्ट्स टाइम पर पूरे कर देते हैं। फिर भी हम 3 साल से एक ही जगह अटके हुए हैं और यह जतिन हमेशा बाजी मार लेता है। 3 साल में उसे दो बार प्रमोशन मिल गया है। हमारी एक बार भी सैलरी नहीं बढ़ी, जबकि उसकी सैलरी दो बार बढ़ाई गई है।' इस पर मुकुंद ने कहा, 'यार तू समझता नहीं, जतिन काम करने के साथ-साथ उसका बखान भी खूब कर लेता है। यही उसका प्लस प्वाइंट है। जबकि तू चुपचाप काम करके निकल लेता है।'

मुकुंद की बात ध्यान देने वाली है। कॉर्पोरेट सेक्टर की जॉब में प्रमोशन, हार्ड वर्क के साथ-साथ खुद की अच्छी ब्रांडिंग और सही स्ट्रेटजी से मिलती है।

अपने वर्क को हाईलाइट करें: माना कि आप एक मेहनती एंप्लॉई हैं और मन लगाकर काम करते हैं। आप अपने बॉस द्वारा दिए गए कामों और जिम्मेदारियों को बखूबी अंजाम देते हैं। लेकिन इन सबके साथ सबसे जरूरी यह है कि आप जो कर रहे हैं, उसे आपका बॉस कैसे और कितना देख पा रहा है। बॉस को लगना चाहिए कि आप पूरी लगन और निष्ठा से ऑफिस का काम कर रहे हैं। आपको अपने काम का डॉक्यूमेंटेशन करना चाहिए और इसे शेयर भी करना चाहिए। टीम में हर किसी को लगना चाहिए कि आप कंपनी/संस्थान और अपने काम के प्रति समर्पित हैं।

खुद को विश्वसनीय बनाएं: प्रमोशन के लिए मेहनत के साथ लाइमलाइट में बने रहने और खुद को विश्वसनीय साबित करने की कला भी जरूरी है। जो लोग लगातार अपने एंप्लॉयर या बॉस की नजर में बने रहते हैं, उनके द्वारा जताई गई किसी भी चिंता या कंपनी की किसी भी समस्या में खुद आगे बढ़कर काम करने का साहस रखते हैं, उनके प्रमोशन की संभावना बहुत ज्यादा होती है। आपको अपने मैनेजर, एंप्लॉयर या प्रभावशाली अधिकारी के साथ बराबर टच में रहना चाहिए। उन्हें बताएं कि कैसे कंपनी से आप भावनात्मक रूप से जुड़े हुए हैं और कंपनी की तरक्की आपकी भी जिम्मेदारी बनती है। यकीन मानिए, इन बातों का जादुई असर होगा।

अपना फ्यूचर विजन शेयर करें: याद रखें किसी भी कंपनी का मालिक या मैनेजर हमेशा अपनी कंपनी को आने वाले समय के ट्रेंड, डिमांड और चुनौतियों के लिए अपडेटेड रखना चाहता है। आपको यह फ्यूचर फोकस्ड साइकोलॉजी समझनी होगी। अगर आप अपने टीम लीडर्स को यह जताने और बताने में कामयाब रहेंगे कि आप एक अपडेटेड एंप्लॉई हैं। लगातार फ्यूचर ट्रेंड, टेक्नोलॉजी और मार्केटिंग स्ट्रेटजी सीखते, समझते रहते हैं तो आप उनकी फेवरेट लिस्ट में रहेंगे। इसके लिए आपको इनकी जानकारी रखनी होगी और उनके साथ डिसकस और शेयर करते रहना होगा। इसका फायदा यह होगा कि वे भले ही आपकी सभी बातें न मानें लेकिन आपके प्रति उनके मन में भरोसा रहेगा और वह आपको प्रमोट करते रहेंगे।

स्पॉटलाइट में बने रहें: ह्यूमन साइकोलॉजी के स्पॉटलाइट इफेक्ट को समझें। इसके तहत आपको न सिर्फ अपनी टीम बल्कि पूरे ऑफिस के कुलीग्स के बीच एक ऐसे व्यक्ति की इमेज बनानी होगी, जो मिलनसार, विनम्र और मददगार स्वभाव का है। साथ ही खुद को एक स्मार्ट टेक सेवी, मेहनती और दूरदर्शी व्यक्ति, एक प्रॉब्लम सॉल्वर के रूप में प्रोजेक्ट करें। इससे कोई आपका समर्थन करे या ना करे लेकिन कोई विरोध नहीं करेगा। आप हमेशा लोगों की नजर में रहेंगे और स्पॉटलाइट में रहेंगे। यह स्ट्रेटजी आपके प्रमोशन में मददगार साबित होगी।

एक्सट्रोवर्ट होना जरूरी: जब आप इंट्रोवर्ट होते हैं, तो आपके बॉस के मन में आपको लेकर क्लेरिटी नहीं रहती है। आप चाहे जितने भी मेहनती क्यों न हों, उनकी नजर और उनके मन से आपका नाम हट जाता है। सुबह से शाम तक अपने ही केबिन में या अपनी चेयर पर न बैठे रहें। ऑफिस में आपको एक्टिव और विजिबल रहना चाहिए और दिन में एकाध बार बॉस या टीम मैनेजर से मिलना चाहिए। आपका स्मार्ट होना और दिखना दोनों जरूरी है। *

न्यू ट्रेंड

संध्या सिंह

आज घर के भीतर से लेकर बाहर हर कहीं बड़ी संख्या में टीनएजर्स और यंगस्टर्स हेडफोंस या ईयरबड्स लगाए देखे जा सकते हैं। इसका ट्रेंड बढ़ने की वजहों पर एक नजर।

यंगस्टर्स के स्टाइल स्टेटमेंट हेडफोंस और ईयरबड्स

हालांकि कोई बिल्कुल सटीक डाटा तो उपलब्ध नहीं है कि देश में कितने युवा हेडफोंस और ईयरबड्स का इस्तेमाल कर रहे हैं, लेकिन एक अनुमान के मुताबिक शहरों में रहने वाला हर दूसरा यंगस्टर और गांव में रहने वाला हर चौथा युवा, हेडफोन या ईयरबड का इस्तेमाल कर रहा है। जहां तक इसके इस्तेमाल के वैश्विक आंकड़े की बात है तो एक अध्ययन के मुताबिक साल 2023 के अंत में करीब 1 अरब टीनएजर्स और यंगस्टर्स, ईयरबड्स का इस्तेमाल कर रहे थे। दिल्ली, मुंबई, बैंग्लुरु, चेन्नई, पुणे, हैदराबाद और चंड़ीगढ़ जैसे महानगरों में देखें तो लगता है, घर से बाहर जाने वाला हर युवा कान में ईयरबड्स या हेडफोंस लगाकर रखता है।

वजहें हैं कई: हेडफोंस और ईयरबड्स को लेकर विश्व स्तर पर हुए अनेक अध्ययनों का निष्कर्ष यह है कि भारत या दुनिया के सभी हिस्सों में किशोरों और युवाओं के बीच इस कदर हेडफोंस और ईयरबड्स को लेकर बढ़ा लगाव, महज उनके संगीत प्रेम तक ही सीमित नहीं है बल्कि इसके पीछे कई तरह के दूसरे सामाजिक, तकनीकी और सांस्कृतिक कारण हैं। आइए, एक-एक करके इन्हें समझने की कोशिश करते हैं।

संगीत प्रेम: निःसंदेह आज की युवा पीढ़ी पिछली शताब्दी की कई पीढ़ियों के मुकाबले कहीं ज्यादा संगीत प्रेमी है। आज की युवा पीढ़ी संगीत को अपनी भावनाओं और व्यक्तित्व के साथ जोड़ती है। ये हेडफोंस और ईयरबड्स, उन्हें अपने पसंदीदा गानों को बिना किसी रुकावट और दूसरों को बिना डिस्टर्ब किए सुनने का अनुभव देते हैं, क्योंकि इनके जरिए युवा ऑन डिमांड म्यूजिक विभिन्न एप्स और म्यूजिक चैनलों के जरिए सुन सकते हैं।

फैशनेबल लुक: ईयरबड्स और हेडफोंस आज की तारीख में यंगस्टर्स के फैशन स्टेटमेंट का हिस्सा भी बन गए हैं। एप्पल एयरपोड्स, बोएट और जेबीएल जैसे ब्रांड्स ने ईयरबड्स और हेडफोंस को कहीं ज्यादा स्टाइलिश और ट्रेंडी बनाया है। इसके साथ महंगे ईयरबड्स या हेडफोंस का इस्तेमाल करना युवाओं के लिए एक स्टेटस सिंबल भी बन गया है।

वर्चुअल इंटरेक्शन: वायरलेस टेक्नोलॉजी ने कनेक्टिविटी को बेहद आसान और बिना किसी तरह की परेशानी वाला बना दिया है। ब्लू टूथ की सुविधा ने सचमुच इस दौर में लोगों को भीड़ में अकेला कर दिया है। यही नहीं शोरगुल भरे परिवेश में भी न्वॉयज कैंसिलेशन जैसे फीचर्स ने म्यूजिक को पहले से कहीं ज्यादा आकर्षक बना दिया है। यही कारण है कि आज लोग चलते-फिरते अपने दूसरे कामों को बाधित किए बिना म्यूजिक का आनंद ले रहे हैं। साथ ही साथ तकनीकी सुविधाओं की वजह से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर जो वीडियो सामग्री की सुविधा बढ़ी है, उसके चलते भी ईयरबड्स की मांग बढ़ गई है।

पर्सनल स्पेस और प्राइवेसी: बहुत से युवा सार्वजनिक स्थानों पर असहज महसूस करते हैं, इसलिए वे ऐसी जगहों पर अपने पसंदीदा म्यूजिक के साथ रहना पसंद करते हैं और यह तभी संभव है, जब अच्छी क्वालिटी के ईयरबड्स और हेडफोंस की उन्हें सुविधा हो। जो यंगस्टर्स, कई तरह के गैजेट्स के प्रति लगाव रखती है, उनके लिए ईयरबड्स भी एक गैजेट ही है। इन्हीं वजहों से यंगस्टर्स में इनका क्रेज बढ़ता जा रहा है। *

होते हैं कई नेगेटिव इफेक्ट्स

भले हेडफोंस और ईयरबड्स का शौक यंगस्टर्स को बहुत भाता हो, लेकिन इसके बहुत सारे नुकसान भी हैं। लगातार हेडफोंस और ईयरबड्स का अगर हम 85 डेसिबल से अधिक ध्वनि के साथ इस्तेमाल करते हैं तो डब्ल्यूएचओ (विश्व स्वास्थ्य संगठन) के अनुसार यह कानों की सेहत के लिए बेहद खतरनाक है। युवाओं के साथ समस्या यह है कि वो जरूरत से ज्यादा ऊंची आवाज में ही म्यूजिक सुनते हैं। इसलिए यह शौक उन्हें धीरे-धीरे बहरेपन या टिनिट्स समस्या की तरफ ले जा सकता है। इसका एक नुकसान यह भी है कि अकसर ईयरबड्स और हेडफोंस से लैस होने के कारण आजकल युवा, लोगों से बातचीत बहुत कम करते हैं, इस तरह उनका सोशल इंटरेक्शन बढ़ रहा है। कानों में लगातार ईयरबड्स पहनने से नमी बनी रहती है, जिस कारण यहां बैक्टीरिया पनपने का खतरा भी हर समय बना रहता है। कानों में दर्द, जलन, माइग्रेन और सिरदर्द की भी समस्या बढ़ सकती है।

खास मुलाकात

पूजा सामंत

मां बनने के बाद यामी गौतम फिल्मों में फिर से एक्टिव हुई हैं। नेटफ्लिक्स पर उनकी फिल्म 'धूम धाम' रिलीज हो चुकी है। इस फिल्म में उनका रोल उनके नेचर से एकदम अपोजिट है, गाली-गलौज करने वाला। यामी के लिए यह रोल कितना चैलेंजिंग रहा? अब उनके पास कैसे रोल आ रहे हैं? खुली बातचीत यामी गौतम से।

अब मुझे स्ट्रॉन्ग कैरेक्टर ऑफर हो रहे हैं : यामी गौतम

यामी गौतम सिर्फ खूबसूरत एक्ट्रेस ही नहीं हैं, वह एक सुलझी हुई और अच्छी एक्ट्रेस भी हैं। उन्होंने अपनी फिल्मों 'आर्टिकल 370', 'काबिल', 'उरी : द सर्जिकल स्ट्राइक', 'चोर निकल के भागा', 'विकी डोनर' और 'दसवीं' में यह सिद्ध भी किया है। निर्माता-निर्देशक आदित्य धर से विवाह के बाद एक बेटे की मां बनीं यामी एक बार फिर फिल्मों में एक्टिव हुई हैं। हाल ही में उनकी फिल्म 'धूम धाम' नेटफ्लिक्स पर रिलीज हुई है। फिल्म में यामी ने 'नेवर बिफोर अवतार' में खुद को पेश किया है। पेश है यामी गौतम से हुई लंबी बातचीत के प्रमुख अंश-

इस शुक्रवार नेटफ्लिक्स पर आपकी फिल्म 'धूम धाम' रिलीज हुई है। इस फिल्म के बारे में कुछ बताएं।

इस फिल्म की कहानी बड़ी मजेदार है। इसे मेरे पति आदित्य धर ने लिखा है। इसे डायरेक्ट किया है ऋषभ सेठ ने। फिल्म में मेरे किरदार का नाम है कोयल चड्ढा, जिसकी शादी वीर पोद्दार (प्रतीक गांधी) से होती है। फिल्म में हमारी अरेंज्ड मैरिज होती है। हम एक-दूसरे के लिए बिल्कुल मिस-मैच्ड हैं। हमारी सोच, हमारी बोली, हमारे स्वभाव, हमारी आदतों में कोई समानता नहीं है। शादी के बाद ससुराल पहुंची कोयल और उसके पति वीर के बीच कैसी नोक-झोंक होती है, उनके कल्चरल डिफरेंसेस किस हद तक पहुंचते हैं, यह देखना दर्शकों के लिए काफी एंटरटेनिंग होगा।

फिल्म 'धूम धाम' में प्रतीक गांधी के साथ यामी गौतम

इस फिल्म में आपका किरदार जमकर गालियां देता है। पर्सनल लाइफ में गाली क्या, ऊंची आवाज में बात तक नहीं करतीं आप। ऐसे में कोयल चड्ढा जैसा अपोजिट किरदार निभाना आपके लिए कितना चैलेंजिंग रहा?

'धूम धाम' में कोयल का किरदार है ही ऐसा। वह स्ट्रेट फॉरवर्ड है, आज के जमाने की है, जो अपनी बोलचाल, व्यवहार में कोई शालीनता या मर्यादा नहीं रखती। वह अपने मन की रानी है, बहुत ही साहसी भी है। वक्त पड़ने पर वो हाथा-पाई भी कर लेती है। वह अपनी डेली लाइफ में गाली-गलौज करती है। गालियां देना उसकी आदत में है। कोयल को गलियां देने में कोई संकोच नहीं है। फिल्म 'धूम धाम' के कैरेक्टर की डिमांड के अनुसार मुझे गाली देनी थी। कोयल और मेरी पर्सनालिटी में जमीन-आसमान का फर्क है, मैंने अपनी जिंदगी में कभी मामूली-सी भी गाली नहीं दी। मैं इसमें कंफर्टेबल नहीं फील कर रही थी। फिल्म में मेरे पति बने प्रतीक गांधी मुझे कंफर्टेबल कराने के लिए कहते थे कि वे मेरी गालियों को नहीं सुन रहे हैं, जिससे मैं कूल होकर डायलॉग्स बोल सकूं।

मां बनने के बाद आप पर्सनल-प्रोफेशनल लाइफ में क्या चेंज फील करती हैं?

मां बनने की खुशी को शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। मां बनने के बाद बायोलॉजिकल बदलाव लाजिमी हैं। इमोशनल स्तर पर भी एक स्त्री अधिक दयालु और सेंसिटिव हो जाती है। जहां तक प्रोफेशनल लाइफ की बात है, मां बनने के बाद एक एक्ट्रेस को अगर फैमिली से सपोर्ट मिले तो वह अपने बच्चे को वक्त देने के साथ-साथ अपने करियर पर भी फोकस कर सकती है। मां बनने के बाद मेरी जिंदगी में करियर के लिहाज से भी बहुत पॉजिटिव चेंज आए हैं। इन दिनों मेरे पास ऐसी फिल्मों के ऑफर आ रहे हैं, जो पहले कभी नहीं आए थे। मुझे अब पहले के मुकाबले स्ट्रॉन्ग कैरेक्टर यानी मीनिंगफुल वूमेन ओरिएंटेड रोल मिल रहे हैं। मेरी पर्सनल और प्रोफेशनल लाइफ अब 360 डिग्री बदल चुकी है। मैं इसे सुखद बदलाव मानती हूं।

निर्माता-निर्देशक आदित्य धर के साथ आपने शादी से पहले भी फिल्म की है। अब वह आपके पति हैं, तो उनके साथ प्रोफेशनली कितना कुछ बदला है?

मैंने आदित्य के साथ 'उरी : द सर्जिकल स्ट्राइक' फिल्म में पहली बार काम किया। इस फिल्म के दौरान हम एक-दूसरे के प्रति कुछ स्पेशल फील करने लगे थे। आगे चलकर हमने शादी की फिर 'आर्टिकल 370' और अब 'धूम धाम' फिल्म साथ में की है। मैं हर अच्छी स्क्रिप्ट का हिस्सा बनना चाहूंगी। फैमिली में आदित्य, उनके भाई लोकेश धर और अब मैं, फिल्म लाइन से जुड़े हैं। कई बार डायनिंग टेबल पर फिल्मों के टॉपिक्स निकलते हैं। लेकिन जब आदित्य मुझे फिल्म का रोल ऑफर करते हैं, तो वो प्रॉपर चैनल से मेरे पास आता है। मेरी मैनेजर मुझे उनकी स्क्रिप्ट सुनवाती है। कहानी, किरदार अच्छे लगें तो ही मैं उस ऑफर को एक्सेप्ट करती हूं। *

कैसे हैं पति-पिता के रोल में आदित्य धर

यामी गौतम से यह पूछने पर कि उनके पति आदित्य धर एक पति और पिता के रोल में कैसे इंसान हैं, वह बताती हैं,'आदित्य बहुत ही अच्छे पति और पिता हैं। आदित्य ग्रेट स्टोरीटेलर हैं। हमारे बेटे वेदाविद को आदित्य कहानियां सुनाते हैं। हालांकि अभी बेटा उनकी कहानियां समझ नहीं पाता है, लेकिन वो अपने पापा के हाव-भावों को निहारता है, उसे एंज्वॉय करता है। हर कहानी के साथ आदित्य बहुत प्यारे-प्यारे एक्सप्रेशंस देते हैं। मैं भी अपना काम छोड़कर पिता-पुत्र दोनों को देखती रहती हूं। आदित्य और वेदाविद के बीच जो अद्भुत, प्यार भरा रिश्ता है, मैं भी उसे महसूस करती हूं।'